अध्याय ७

महाप्रभु द्वारा दक्षिण भारत की यात्रा

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में सातवें अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने माघ मास (जनवरी-फरवरी) में संन्यास ग्रहण किया और फाल्गुन मास (फरवरी-मार्च) में वे जगन्नाथ पुरी गये। उन्होंने फाल्गुन मास में दोलयात्रा उत्सव देखा और चैत्र मास में सार्वभौम भट्टाचार्य का उद्धार किया। वैशाख मास में उन्होंने दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की। जब उन्होंने अकेले ही यात्रा करने का प्रस्ताव रखा, तो श्री नित्यानन्द प्रभु ने उन्हें कृष्णदास नामक एक ब्राह्मण को सहायक के रूप में दे दिया। जब श्री चैतन्य महाप्रभु चलने लगे, तो सार्वभौम भट्टाचार्य ने उन्हें चार जोड़ी कपड़े दिये और प्रार्थना की कि वे गोदावरी तट पर निवास कर रहे रामानन्द राय से अवश्य मिलें। नित्यानन्द प्रभु अन्य भक्तों के साथ-साथ आलालनाथ तक महाप्रभु के साथ गये। किन्तु वहाँ पर उन सबको छोड़कर भगवान् चैतन्य कृष्णदास ब्राह्मण सहित आगे बढ़ गये। महाप्रभु *कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे* मन्त्र का कीर्तन करने लगे। महाप्रभुने जिस भी गाँव में रात बिताई और जो भी व्यक्ति उनके पड़ाव में उनसे मिलने आया, उससे उन्होंने कृष्णभावनामृत आन्दोलन का प्रचार करने की प्रार्थना की। भक्तों की संख्या बढ़ाने के लिए वे एक गाँव के लोगों को शिक्षा देने के बाद दूसरे गाँवों की ओर बढ़ते गये। इस तरह वे अन्त में कूर्मस्थान पहुँचे। वहाँ पर उन्होंने कूर्म नामक ब्राह्मण को अपनी अहैतुकी कृपा प्रदान की और कुष्ठ रोग से पीड़ित वासुदेव नामक एक अन्य ब्राह्मण को निरोग बनाया। कुष्ठ रोगी ब्राह्मण को अच्छा करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु को वासुदेवामृतप्रद उपाधि मिली, जिसका अर्थ है "जिसने वासुदेव कोढ़ी को अमृत प्रदान किया।"

ধন্যং তং নৌমি চৈতন্যং বাসুদেবং দয়ার্দ্র-ধী ।
নষ্ট-কুষ্ঠং রূপ-পুষ্টং ভক্তি-তুষ্টং চকার যঃ ॥১॥

धन्यं तं नौमि चैतन्यं वासुदेवं दयार्द्र-धी ।
नष्ट-कुष्ठं रूप-पुष्टं भक्ति-तुष्टं चकार यः ॥ १ ॥

धन्यम्—शुभ; **तम्**—उनको; **नौमि**—मैं नमस्कार करता हूँ; **चैतन्यम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **वासुदेवम्**—वासुदेव नामक ब्राह्मण को; **दया-आर्द्र-धी**—दयालु होकर; **नष्ट-कुष्ठम्**—कुष्ठ रोग नष्ट किया; **रूप-पुष्टम्**—सुन्दर; **भक्ति-तुष्टम्**—भक्ति में तुष्ट; **चकार**—किया; **यः**—भगवान्।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने वासुदेव नामक ब्राह्मण पर अत्यन्त कृपालु होकर उसका कुष्ठ रोग ठीक कर दिया। उन्होंने उसे भक्ति से सन्तुष्ट एक सुन्दर पुरुष में परिवर्तित कर दिया। मैं उन महिमावान श्री चैतन्य महाप्रभु को सादर प्रणाम करता हूँ।

জয় জয় শ্রী-চৈতন্য জয় নিত্যানন্দ ।
জয়াদ্বৈত-চন্দ্র জয় গৌর-ভক্ত-বৃন্দ ॥২॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २ ॥

जय जय—जय हो; **श्री-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की जय; **जय गौर-भक्त-वृन्द**—भगवान् चैतन्य के भक्तों की जय हो।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो एवं श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की जय हो!

এই-মতে সার্বভৌমের নিস্তার করিল ।
দক্ষিণ-গমনে প্রভুর ইচ্ছা উপজিল ॥৩॥

एइ-मते सार्वभौमेर निस्तार करिल ।
दक्षिण-गमने प्रभुर इच्छा उपजिल ॥ ३ ॥

एइ-मते—इस प्रकार; **सार्वभौमेर**—सार्वभौम भट्टाचार्य का; **निस्तार**—उद्धार; **करिल**—किया गया; **दक्षिण-गमने**—दक्षिण भारत जाने की; **प्रभुर**—महाप्रभु की; **इच्छा**—इच्छा; **उपजिल**—उठी।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य का उद्धार करने के बाद महाप्रभु को दक्षिण भारत में प्रचार करने की इच्छा हुई।

माघ-शुक्ल-पक्षे प्रभु करिल सन्न्यास ।
फाल्गुने आसिया कैल नीलाचले वास ॥ ४ ॥

माघ-शुक्ल-पक्षे प्रभु करिल सन्न्यास ।
फाल्गुने आसिया कैल नीलाचले वास ॥ ४ ॥

माघ-शुक्ल-पक्षे—माघ मास के शुक्ल पक्ष में; **प्रभु**—महाप्रभु; **करिल**—स्वीकार किया; **सन्न्यास**—संन्यास; **फाल्गुने**—अगले महीने फाल्गुन में; **आसिया**—आकर; **कैल**—किया; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **वास**—निवास।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने माघ मास के शुक्लपक्ष में संन्यास ग्रहण किया। उसके अगले मास फाल्गुन में वे जगन्नाथ पुरी गये और वहाँ रहे।

फाल्गुनेर शेषे दोल-यात्रा से देखिल ।
प्रेमावेशे ताँहा बहु नृत्य-गीत कैल ॥ ५ ॥

फाल्गुनेर शेषे दोल-यात्रा से देखिल ।
प्रेमावेशे ताँहा बहु नृत्य-गीत कैल ॥ ५ ॥

फाल्गुनेर—फाल्गुन महीने के; **शेषे**—अन्त में; **दोल-यात्रा**—दोल यात्रा उत्सव; **से**—वह; **देखिल**—देखा; **प्रेम-आवेशे**—भगवत्प्रेम के भावावेश में; **ताँहा**—वहाँ; **बहु**—बहुत; **नृत्य-गीत**—गान और नृत्य; **कैल**—किया।

अनुवाद

फाल्गुन मास के अन्त में उन्होंने दोलयात्रा उत्सव देखा और अपने

स्वाभाविक भगवत् प्रेम के भावावेश में आकर उन्होंने उस अवसर पर कीर्तन तथा विविध प्रकार से नृत्य किया।

चैत्रे रहि' कैल सार्वभौम-विमोचन ।
वैशाखेर प्रथमे दक्षिण याइते हैल मन ॥ ६ ॥

चैत्रे रहि' कैल सार्वभौम-विमोचन ।
वैशाखेर प्रथमे दक्षिण याइते हैल मन ॥ ६ ॥

चैत्रे—चैत्र (मार्च-अप्रैल) मास में; **रहि'**—वहाँ रहकर; **कैल**—किया; **सार्वभौम-विमोचन**—सार्वभौम भट्टाचार्य का उद्धार; **वैशाखेर**—वैशाख मास के; **प्रथमे**—प्रारम्भ में; **दक्षिण**—दक्षिण भारत; **याइते**—जाने का; **हैल**—हुआ; **मन**—मन।

अनुवाद

चैत्र मास में जगन्नाथ पुरी में रहते हुए उन्होंने सार्वभौम भट्टाचार्य का उद्धार किया और वैशाख मास के लगते ही उन्होंने दक्षिण भारत जाने का निश्चय किया।

निज-गण आनि' कहे विनय करिया ।
आलिङ्गन करि' सबाय श्री-हस्ते धरिया ॥ ७ ॥
तोमा-सबा जानि आमि प्राणाधिक करि' ।
प्राण छाड़ा याय, तोमा-सबा छाड़िते ना पारि ॥ ८ ॥

निज-गण आनि' कहे विनय करिया ।
आलिङ्गन करि' सबाय श्री-हस्ते धरिया ॥ ७ ॥
तोमा-सबा जानि आमि प्राणाधिक करि' ।
प्राण छाड़ा याय, तोमा-सबा छाड़िते ना पारि ॥ ८ ॥

निज-गण आनि'—सभी भक्तों को बुलाकर; **कहे**—कहा; **विनय**—विनय; **करिया**—करके; **आलिङ्गन करि'**—आलिंगन करके; **सबाय**—उन सबको; **श्री-हस्ते**—अपने करकमलों से; **धरिया**—उनको पकड़कर; **तोमा-सबा**—तुम सब; **जानि**—मैं जानता हूँ; **आमि**—मैं; **प्राण-अधिक**—अपने प्राणों से अधिक; **करि'**—लेकर; **प्राण छाड़ा**—प्राण त्यागना; **याय**—सम्भव है; **तोमा-सबा**—तुम सबको; **छाड़िते**—छोड़ने में; **ना पारि**—सक्षम नहीं हूँ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने सारे भक्तों को बुलाकर और उनके हाथ पकड़कर विनयपूर्वक उनसे इस प्रकार कहा, "तुम सभी लोग मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारे हो। मैं अपना प्राण छोड़ सकता हूँ, किन्तु तुम लोगों को छोड़ पाना मेरे लिए कठिन है।

तुमि-सब बन्धु मोर बन्धु-कृत्य कैले ।
इहाँ आनि' मोरे जगन्नाथ देखाइले ॥९॥

तुमि-सब बन्धु मोर बन्धु-कृत्य कैले ।
इहाँ आनि' मोरे जगन्नाथ देखाइले ॥ ९ ॥

तुमि-सब—तुम सब; **बन्धु**—मित्र; **मोर**—मेरे; **बन्धु-कृत्य**—मित्र का कर्तव्य; **कैले**—तुमने निभाया है; **इहाँ**—यहाँ; **आनि'**—लाकर; **मोरे**—मुझे; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **देखाइले**—तुमने दर्शन कराया है।

अनुवाद

"तुम सब मेरे मित्र हो और तुम लोगों ने मुझे जगन्नाथ पुरी लाकर तथा मन्दिर में भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने का अवसर प्रदान करके अपना मित्र-कर्तव्य निभाया है।

एबे सबा-स्थाने मुञि मागों एक दाने ।
सबे मेलि' आज्ञा देह, याइब दक्षिणे ॥१०॥

एबे सबा-स्थाने मुञि मागों एक दाने ।
सबे मेलि' आज्ञा देह, याइब दक्षिणे ॥ १० ॥

एबे—अब; **सबा-स्थाने**—तुम सबसे; **मुञि**—मैं; **मागों**—माँगता हूँ; **एक दाने**—एक अनुदान; **सबे मेलि'**—सब मिलकर; **आज्ञा देह**—आज्ञा दो; **याइब**—मैं जाऊँगा; **दक्षिणे**—दक्षिण भारत।

अनुवाद

"अब मैं तुम लोगों से एक छोटा-सा दान माँग रहा हूँ। कृपा करके मुझे दक्षिण भारत की यात्रा पर प्रस्थान करने की अनुमति प्रदान करें।

विश्वरूप-उद्देशे अवश्य आमि याव ।
एकाकी याइव, काहो सङ्गे ना लइव ॥ ११॥

विश्वरूप-उद्देशे अवश्य आमि याब ।
एकाकी याइब, काहो सङ्गे ना लइब ॥ ११॥

विश्वरूप-उद्देशे—विश्वरूप को ढूंढने के लिए; **अवश्य**—अवश्य; **आमि**—मैं; **याब**—जाऊँगा; **एकाकी**—अकेला; **याइब**—मैं जाऊँगा; **काहो**—किसी को; **सङ्गे**—साथ में; **ना**—नहीं; **लइब**—लूँगा।

अनुवाद

"मैं विश्वरूप की खोज करने जाउँगा। तुम लोग मुझे क्षमा करना, किन्तु मैं अकेले जाना चाहता हूँ। मैं किसी को अपने साथ नहीं ले जाना चाहता।

सेतुबन्ध हैते आमि ना आसि यावत् ।
नीलाचले तुमि सब रहिवे तावत् ॥ १२॥

सेतुबन्ध हैते आमि ना आसि याबत् ।
नीलाचले तुमि सब रहिबे तावत् ॥ १२॥

सेतुबन्ध—सेतुबन्ध, भारत की दक्षिण दिशा की सीमा; **हैते**—से; **आमि**—मैं; **ना**—नहीं; **आसि**—लौटकर आता; **याबत्**—जब तक; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में ; **तुमि**—तुम; **सब**—सब; **रहिबे**—रहो; **तावत्**—तब तक।

अनुवाद

"जब तक मैं सेतुबन्ध से लौट न आऊँ, तब तक तुम सब जगन्नाथ पुरी में ही रहना।"

विश्वरूप-सिद्धि-प्राप्ति जानेन सकल ।
दक्षिण-देश उद्धारिते करेन एई छल ॥ १३॥

विश्वरूप-सिद्धि-प्राप्ति जानेन सकल ।
दक्षिण-देश उद्धारिते करेन एइ छल ॥ १३॥

विश्वरूप—विश्वरूप की; **सिद्धि**—सिद्धि की; **प्राप्ति**—प्राप्ति; **जानेन**—महाप्रभु जानते

हैं; **सकल**—सब कुछ; **दक्षिण-देश**—दक्षिण भारत; **उद्धारिते**—उद्धार करने के लिए; **करेन**—करते हैं; **एइ**—यह; **छल**—बहाना।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु सर्वज्ञ हैं, इसलिए वे भलीभाँति जानते थे कि विश्वरूप पहले ही चल बसे हैं, किन्तु अनजान बनने का बहाना आवश्यक था, जिससे वे दक्षिण भारत जाकर वहाँ के लोगों का उद्धार कर सकें।

শুনিয়া সবার মনে হৈল মহা-দুঃখ ।
নিঃশব্দ হইলা, সবার শুকাইল মুখ ॥ ১৪॥
शुनिया सबार मने हैल महा-दुःख ।
निःशब्द हइला, सबार शुकाइल मुख ॥ १४॥

शुनिया—यह सुनकर; **सबार**—सब भक्तों के; **मने**—मन में; **हैल**—हुआ; **महा-दुःख**—अत्यन्त दुःख; **निःशब्द**—चुप; **हइला**—हो गये; **सबार**—सबके; **शुकाइल**—शुष्क हो गये; **मुख**—चेहरे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के मुख से यह समाचार सुनकर सारे भक्त अत्यन्त दुःखी हुए, उनके मुख सूख गये और वे मौन हो गये।

নিত্যানন্দ-প্রভু কহে,—"ঐছে কৈছে হয় ।
একাকী যাইবে তুমি, কে ইহা সহয় ॥ ১৫॥
नित्यानन्द-प्रभु कहे,—"ऐछे कैछे हय ।
एकाकी याइबे तुमि, के इहा सहय ॥ १५॥

नित्यानन्द-प्रभु कहे—नित्यानन्द प्रभु ने उत्तर दिया; **ऐछे कैछे हय**—ऐसा कैसे सम्भव है; **एकाकी**—अकेले; **याइबे**—जाओगे; **तुमि**—आप; **के**—कौन; **इहा**—इसे; **सहय**—सह सकता है।

अनुवाद

तब नित्यानन्द प्रभु ने कहा, "यह कैसे हो सकता है कि आप अकेले जाएँ? इसे कौन सहन कर सकता है?"

দুই-এক সঙ্গে চলুক, না পড় হঠ-রঙ্গে ।
যারে কহ সেই দুই চলুক তোমার সঙ্গে ॥ ১৬ ॥

দুই-এক সঙ্গে চলুক, না পড় হঠ-রঙ্গে ।
যারে কহ সেই দুই চলুক তোমার সঙ্গে ॥ ১৬ ॥

দুই—दो; **এক**—या एक; **সঙ্গে**—आपके साथ; **চলুক**—जाने दो; **না**—नहीं; **পড়**—पड़ जाओगे; **হঠ-রঙ্গে**—चोरों और गुण्डों के फंदे में; **যারে**—जिसे भी; **কহ**—आप कहो; **সেই**—वे ही; **দুই**—दो; **চলুক**—जाएँ; **তোমার**—आपके; **সঙ্গে**—साथ।

अनुवाद

"हममें से एक या दो को अपने साथ चलने दें, अन्यथा आप रास्ते में चोरों तथा धूर्तों के चंगुल में पड़ सकते हैं। हममें से आप जिन्हें चाहें ले लें, किन्तु हर हालत में दो व्यक्तियों को आपके साथ जाना चाहिए।

দক্ষিণের তীর্থ-পথ আমি সব জানি ।
আমি সঙ্গে যাই, প্রভু, আজ্ঞা দেহ তুমি" ॥ ১৭ ॥

দক্ষিণের তীর্থ-পথ আমি সব জানি ।
আমি সঙ্গে যাই, প্রভু, আজ্ঞা দেহ তুমি" ॥ ১৭ ॥

দক্ষিণের—दक्षिण भारत के; **তীর্থ-পথ**—तीर्थ के मार्ग; **আমি**—मैं; **সব**—सब; **জানি**—जानता हूँ; **আমি**—मैं; **সঙ্গে**—आपके साथ; **যাই**—चलता हूँ; **প্রভু**—हे मेरे प्रभु; **আজ্ঞা**—आज्ञा; **দেহ**—दो; **তুমি**—आप।

अनुवाद

"मैं दक्षिण भारत के विभिन्न तीर्थस्थलों के सारे मार्ग जानता हूँ। बस, आप आज्ञा दें तो मैं आपके साथ चला चलूँ।"

প্রভু কহে, "আমি—নর্তক, তুমি—সূত্র-ধার ।
তুমি যৈছে নাচাও, তৈছে নর্তন আমার ॥ ১৮ ॥

প্রভু কহে, "আমি—নর্তক, তুমি—সূত্র-ধার ।
তুমি যৈছে নাচাও, তৈছে নর্তন আমার ॥ ১৮ ॥

প্রভু কহে—महाप्रभु ने उत्तर दिया; **আমি**—मैं; **নর্তক**—नर्तक; **তুমি**—तुम; **সূত্র-ধার**—

सूत्रधार; **तुमि**—तुम; **ग्रैछे**—जैसे; **नाचाओ**—नचाओ; **तैछे**—वैसे; **नर्तन**—नर्तन, नृत्य; **आमार**—मेरा।

अनुवाद

महाप्रभु ने उत्तर दिया, "मैं तो मात्र नर्तक हूँ और तुम डोर खींचने वाले (सूत्रधार) हो। तुम जिस तरह नचाओगे, मैं उसी तरह नाचूँगा।"

सन्न्यास करिया आमि चलिलाँ वृन्दावन ।
तुमि आमा लञा आइले अद्वैत-भवन ॥ १९ ॥

सन्न्यास करिया आमि चलिलाँ वृन्दावन ।
तुमि आमा लञा आइले अद्वैत-भवन ॥ १९ ॥

सन्न्यास करिया—संन्यास लेने के बाद; **आमि**—मैं; **चलिलाँ**—गया; **वृन्दावन**—वृन्दावन की ओर; **तुमि**—तुम; **आमा**—मुझे; **लञा**—लेकर; **आइले**—गये; **अद्वैत-भवन**—अद्वैत प्रभु के घर।

अनुवाद

"संन्यास ग्रहण करने के बाद मैंने वृन्दावन जाने का निश्चय किया, किन्तु तुम मुझे वहाँ न ले जाकर अद्वैत प्रभु के घर ले आये।

नीलाचल आसिते पथे भाङ्गिला मोर दण्ड ।
तोमा-सवार गाढ़-स्नेहे आमार कार्य-भङ्ग ॥ २० ॥

नीलाचल आसिते पथे भाङ्गिला मोर दण्ड ।
तोमा-सबार गाढ़-स्नेहे आमार कार्य-भङ्ग ॥ २० ॥

नीलाचल—जगन्नाथ पुरी; **आसिते**—जाते हुए; **पथे**—रास्ते में; **भाङ्गिला**—तुमने तोड़ दिया; **मोर**—मेरा; **दण्ड**—संन्यास दण्ड; **तोमा-सबार**—तुम सबके; **गाढ़-स्नेहे**—गहरे स्नेह के कारण; **आमार**—मेरा; **कार्य-भङ्ग**—कार्य बिगड़ गया।

अनुवाद

"जगन्नाथ पुरी आते समय तुमने मेरा संन्यास-दण्ड तोड़ डाला। मैं जानता हूँ कि तुम सबका मुझ पर अतीव स्नेह है, किन्तु इससे मेरे कार्य में बाधा पहुँचती है।"

জগদানন্দ চাহে আমা বিষয় ভুঞ্জাইতে ।
যেই কহে সেই ভয়ে চাহিয়ে করিতে ॥২১॥

जगदानन्द चाहे आमा विषय भुञ्जाइते ।
ग्रेइ कहे सेइ भये चाहिये करिते ॥ २१ ॥

जगदानन्द—जगदानन्द; **चाहे**—चाहता है; **आमा**—मुझे; **विषय**—विषय तृप्ति; **भुञ्जाइते**—का आनन्द देना; **ग्रेइ कहे**—वह जो कुछ कहता है; **सेइ**—वह; **भये**—भय के कारण; **चाहिये**—मैं चाहता हूँ; **करिते**—करना।

अनुवाद

"जगदानन्द चाहता है कि मैं शारीरिक इन्द्रिय-भोग करूँ और वह मुझसे जो-जो कहता है, वह भयवश मैं करता हूँ।

কভু যদি ইঁহার বাক্য করিয়ে অন্যথা ।
ক্রোধে তিন দিন মোরে নাহি কহে কথা ॥২২॥

कभु ग्रदि इँहार वाक्य करिये अन्यथा ।
क्रोधे तिन दिन मोरे नाहि कहे कथा ॥ २२ ॥

कभु—कभी-कभी; **ग्रदि**—यदि; **इँहार**—जगदानन्द का; **वाक्य**—कहना; **करिये**—मैं करता हूँ; **अन्यथा**—कुछ और; **क्रोधे**—क्रोध में; **तिन दिन**—तीन दिन; **मोरे**—मुझे; **नाहि**—नहीं; **कहे**—बोलता; **कथा**—वार्तालाप।

अनुवाद

"यदि कभी मैं उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ करता हूँ, तो वह क्रोधवश तीन दिनों तक मुझसे बात नहीं करता।

মুকুন্দ হয়েন দুঃখী দেখি' সন্ন্যাস-ধর্ম ।
তিনবারে শীতে স্নান, ভূমিতে শয়ন ॥২৩॥

मुकुन्द हयेन दुःखी देखि' सन्न्यास-धर्म ।
तिनबारे शीते स्नान, भूमिते शयन ॥ २३ ॥

मुकुन्द—मुकुन्द; **हयेन**—हो जाता है; **दुःखी**—अप्रसन्न; **देखि'**—देखकर; **सन्न्यास-धर्म**—संन्यास धर्म के सिद्धान्त; **तिन-बारे**—तीन बार; **शीते**—शीलकाल में; **स्नान**—स्नान; **भूमिते**—पृथ्वी पर; **शयन**—लेटकर।

अनुवाद

"संन्यासी होने के कारण मेरा धर्म है कि जमीन पर सोऊँ और जाड़े में भी प्रतिदिन तीन बार स्नान करूँ। किन्तु मुकुन्द बेचारा मेरी कठोर तपस्या को देखकर अत्यन्त दुःखी होता है।

অন্তরে দুঃখী মুকুন্দ, নাহি কহে মুখে ।
ইহার দুঃখ দেখি' মোর দ্বি-গুণ হয়ে দুঃখে ॥২৪॥

अन्तरे दुःखी मुकुन्द, नाहि कहे मुखे ।
इहार दुःख देखि' मोर द्वि-गुण हये दुःखे ॥ २४॥

अन्तरे—मन में; **दुःखी**—दुःखी; **मुकुन्द**—मुकुन्द; **नाहि**—नहीं; **कहे**—कहता है; **मुखे**—मुख से; **इहार**—उसके; **दुःख**—दुःख; **देखि'**—देखकर; **मोर**—मेरा; **द्वि-गुण**—दुगना; **हये**—है; **दुःखे**—दुःख।

अनुवाद

"हाँ, मुकुन्द कुछ कहता नहीं, किन्तु मैं जानता हूँ कि वह अन्दर से अत्यन्त दुःखी है और उसे दुःखी देखकर मैं उससे दुगना दुःखी हो जाता हूँ।

আমি ত'—সন্ন্যাসী, দামোদর—ব্রহ্মচারী ।
সদা রহে আমার উপর শিক্ষা-দণ্ড ধরি' ॥২৫॥

आमि त'—सन्न्यासी, दामोदर—ब्रह्मचारी ।
सदा रहे आमार उपर शिक्षा-दण्ड धरि' ॥ २५॥

आमि त'—मैं निस्सन्देह; **सन्न्यासी**—संन्यासी; **दामोदर**—दामोदर; **ब्रह्मचारी**—ब्रह्मचारी; **सदा**—सदा; **रहे**—रहता है; **आमार उपर**—मेरे ऊपर; **शिक्षा-दण्ड**—मेरी शिक्षा के लिए दण्डा; **धरि'**—रखकर।

अनुवाद

"यद्यपि मैं संन्यासी हूँ और दामोदर एक ब्रह्मचारी है, फिर भी वह मुझे शिक्षा देने के लिए अपने हाथ में दण्ड लिए रहता है।

ইঁহার আগে আমি না জানি ব্যবহার ।
ইঁহারে না ভায় স্বতন্ত্র চরিত্র আমার ॥২৬॥

ইঁহার আগে আমি না জানি ব্যবহার ।
ইঁহারে না ভায় স্বতন্ত্র চরিত্র আমার ॥ ২৬ ॥

ইঁহার আগে—उसके समक्ष; **আমি**—मैं; **না**—नहीं; **জানি**—जानता; **ব্যবহার**—व्यवहार; **ইঁহারে**—उसके लिए; **না**—नहीं; **ভায়**—है; **স্বতন্ত্র**—स्वतंत्र; **চরিত্র**—चरित्र; **আমার**—मेरा।

अनुवाद

"दामोदर के अनुसार सामाजिक व्यवहार में मैं अब भी नौसिखिया हूँ, अतएव उसे मेरी स्वतन्त्र प्रकृति नहीं भाती।

লোকাপেক্ষা নাহি ইঁহার কৃষ্ণ-কৃপা হৈতে ।
আমি লোকাপেক্ষা কভু না পারি ছাড়িতে ॥২৭॥

লোকাপেক্ষা নাহি ইঁহার কৃষ্ণ-কৃপা হৈতে ।
আমি লোকাপেক্ষা কভু না পারি ছাড়িতে ॥ ২৭ ॥

লোক-অপেক্ষা—समाज की अपेक्षा; **নাহি**—नहीं है; **ইঁহার**—दामोदर की; **কৃষ্ণ-কৃপা**—कृष्ण कृपा; **হৈতে**—से; **আমি**—मैं; **লোক-অপেক্ষা**—लोक अपेक्षा पर निर्भर; **কভু**—किसी भी समय; **না**—नहीं; **পারি**—सकता; **ছাড়িতে**—छोड़।

अनुवाद

"दामोदर पण्डित तथा अन्य लोगों को भगवान् कृष्ण की अधिक कृपा प्राप्त है, अतएव वे लोग लोक-मत से स्वतन्त्र हैं। इसलिए वे चाहते हैं कि मैं इन्द्रियतृप्ति करूँ, भले ही यह अनैतिक क्यों न हो। किन्तु मैं एक दीन संन्यासी हूँ। मैं संन्यास के कर्तव्यों को नहीं त्याग सकता, अतएव मैं उनका कठोरता से पालन करता हूँ।

तात्पर्य

ब्रह्मचारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह संन्यासी की सहायता करे। अतएव ब्रह्मचारी को चाहिए कि वह संन्यासी को उपदेश न दे। यही शिष्टाचार है। अतएव दामोदर को चाहिए था कि वह चैतन्य महाप्रभु को उनके कर्तव्य के विषय में उपदेश न देता।

অতএব তুমি সব রহ নীলাচলে ।
দিন কত আমি তীর্থ ভ্রমিব একলে'' ॥২৮॥

अतएव तुमि सब रह नीलाचले ।
दिन कत आमि तीर्थ भ्रमिब एकले" ॥ २८ ॥

अतएव—अतएव; **तुमि**—तुम; **सब**—सब; **रह**—रहो; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **दिन**—दिन; **कत**—कुछ; **आमि**—मैं; **तीर्थ**—तीर्थस्थानों पर; **भ्रमिब**—मैं भ्रमण करूँगा; **एकले**—अकेले।

अनुवाद

"अतएव तुम सभी लोग कुछ दिनों तक यहाँ नीलाचल में रहो, जिससे मैं अकेले ही तीर्थस्थानों की यात्रा कर आऊँ।"

ইঁহা-সবার বশ প্রভু হয়ে যে যে গুণে ।
দোষারোপ-চ্ছলে করে গুণ আস্বাদনে ॥২৯॥

इँहा-सबार वश प्रभु हये ये ये गुणे ।
दोषारोप-च्छले करे गुण आस्वादने ॥ २९ ॥

इँहा-सबार—सब भक्तों के; **वश**—नियंत्रित; **प्रभु**—महाप्रभु; **हये**—है; **ये ये**—जो जो; **गुणे**—गुण; **दोष-आरोप-छले**—दोषारोपण के बहाने; **करे**—करते हैं; **गुण**—गुण; **आस्वादने**—आस्वादन।

अनुवाद

वास्तव में महाप्रभु अपने सारे भक्तों के सद्गुणों के वशीभूत थे। उन्होंने दोषारोपण करने के बहाने उन सारे गुणों का आस्वादन किया।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने प्रिय भक्तों पर जिन दोषों का आरोप किया, वास्तव में उन दोषों के बहाने वे उनके प्रगाढ़ प्रेम की अत्यन्त प्रशंसा कर रहे थे। फिर भी उन्होंने एक-एक करके इन सारे दोषों का उल्लेख इस तरह से किया, मानो वे उनके प्रगाढ़ स्नेह से दुःखी हों। कभी-कभी श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी संगी महाप्रभु के प्रगाढ़ प्रेमवश नियम-विरुद्ध आचरण करते थे और कभी-कभी उनके प्रेमवश महाप्रभु स्वयं भी संन्यासी के नियमों का उल्लंघन कर देते थे। लोक-दृष्टि में ऐसे उल्लंघन अच्छे नहीं माने जाते, किन्तु श्री

चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों के स्नेह से इस प्रकार वशीभूत थे कि वे कुछ नियमों को भंग करने के लिए बाध्य थे। यद्यपि श्री चैतन्य महाप्रभु उन पर दोषारोपण करते थे, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से वे यह इंगित कर रहे थे कि वे उनके शुद्ध भगवत्प्रेम युक्त व्यवहार से अत्यन्त प्रसन्न हैं। इसीलिए श्लोक २७ में वे उल्लेख करते हैं कि उनके भक्त तथा संगी सामाजिक व्यवहार की अपेक्षा कृष्ण-प्रेम को अधिक महत्त्व देते हैं। पूर्ववर्ती आचार्यों की भक्ति के ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त हैं जब उन्होंने कृष्ण-प्रेम से अभिभूत होकर सामाजिक व्यवहार की तनिक भी परवाह नहीं की। दुर्भाग्यवश, जब तक हम इस भौतिक जगत् में हैं, हमें सामान्य जनता की आलोचना से बचने के लिए सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन करना होगा। यही श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा है।

चैतन्येर भक्त-वात्सल्य—अकथ्य-कथन ।
आपने वैराग्य-दुःख करेन सहन ॥ ३० ॥
चैतन्येर भक्त-वात्सल्य—अकथ्य-कथन ।
आपने वैराग्य-दुःख करेन सहन ॥ ३० ॥

चैतन्येर—चैतन्य महाप्रभु का; **भक्त-वात्सल्य**—भक्तों के लिए प्रेम; **अकथ्य-कथन**—शब्दों में अकथनीय; **आपने**—स्वयं; **वैराग्य**—वैराग्य का; **दुःख**—दुःख; **करेन**—करते हैं; **सहन**—सहन।

अनुवाद

अपने भक्तों के प्रति श्री चैतन्य महाप्रभु में जो प्रेम था, उसका सही-सही वर्णन कोई भी नहीं कर सकता। उन्होंने संन्यास ग्रहण करने के फलस्वरूप सभी प्रकार के निजी दुःखों को सदैव सहन किया।

सेइ दुःख देखि' येइ भक्त दुःख पाय ।
सेइ दुःख ताँर शक्त्ये सहन ना याय ॥ ३१ ॥
सेइ दुःख देखि' येइ भक्त दुःख पाय ।
सेइ दुःख ताँर शक्त्ये सहन ना याय ॥ ३१ ॥

सेइ दुःख—वही दुःख; **देखि'**—देखकर; **येइ**—जो; **भक्त**—भक्त; **दुःख**—दुःख;

पाय—पाते हैं; **सेइ दुःख**—वही दुःख; **ताँर**—उनकी; **शक्त्ये**—शक्ति से; **सहन**—सहन करना; **ना**—नहीं; **ग्राय**—सम्भव।

अनुवाद

कभी-कभी श्री चैतन्य महाप्रभु असह्य नियमों का पालन करते और सारे भक्त उनसे अत्यधिक दुःखी होते। यद्यपि महाप्रभु नियमों का कठोरता से पालन करते, किन्तु वे अपने भक्तों के दुःखों को सहन नहीं कर पाते थे।

गुणे दोषोदगार-छ्छले सवा निषेधिया ।
एकाकी भ्रमिवेन तीर्थ वैराग्य करिया ॥३२॥

गुणे दोषोद्गार-च्छले सबा निषेधिया ।
एकाकी भ्रमिबेन तीर्थ वैराग्य करिया ॥ ३२ ॥

गुणे—गुणों में; **दोष-उद्गार-छले**—दोषारोपण के बहाने; **सबा**—उन सबको; **निषेधिया**—इन्कार करके; **एकाकी**—अकेले; **भ्रमिबेन**—भ्रमण करेंगें; **तीर्थ**—तीर्थ स्थानों में; **वैराग्य**—वैराग्य; **करिया**—का पालन करके।

अनुवाद

अतएव उन्हें अपने साथ चलने और दुःखी होने से रोकने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनके गुणों को दोष कहकर घोषित किया।

तात्पर्य

महाप्रभु सारे तीर्थस्थानों का अकेले भ्रमण करना चाहते थे और संन्यास-धर्म का दृढ़ता से पालन करना चाहते थे।

तवे चारि-जन वहु मिनति करिल ।
स्वतन्त्र ईश्वर प्रभु कभु ना मानिल ॥३३॥

तबे चारि-जन बहु मिनति करिल ।
स्वतन्त्र ईश्वर प्रभु कभु ना मानिल ॥ ३३ ॥

तबे—तत्पश्चात्; **चारि-जन**—चारों लोगों ने; **बहु**—बहुत; **मिनति**—प्रार्थना; **करिल**—की; **स्वतन्त्र**—स्वतंत्र; **ईश्वर**—ईश्वर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कभु**—कभी भी; **ना**—न; **मानिल**—माने।

अनुवाद

तब चार भक्तों ने बहुत अनुनय-विनय की कि वे महाप्रभु के साथ चलें, किन्तु स्वतन्त्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् होने के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की।

তবে নিত্যানন্দ কহে,——যে আজ্ঞা তোমার ।
দুঃখ সুখ যে হউক্কর্তব্য আমার ॥ ৩৪॥

तबे नित्यानन्द कहे,——ग्रे आज्ञा तोमार ।
दु:ख सुख ग्रे हउक्कर्तव्य आमार ॥ ३४॥

तबे—तब; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **कहे**—कहने लगे; **ग्रे आज्ञा**—जो आज्ञा; **तोमार**—आपकी; **दु:ख सुख**—दु:ख सुख; **ग्रे**—जो कुछ; **हउक्**—हो; **कर्तव्य**—कर्तव्य; **आमार**—मेरा।

अनुवाद

तब नित्यानन्द प्रभु ने कहा, "आपकी आज्ञा मेरा कर्तव्य है, चाहे उससे हमें सुख मिले या दु:ख।

কিন্তু এক নিবেদন করোঁ আর বার ।
বিচার করিয়া তাহা কর অঙ্গীকার ॥ ৩৫॥

किन्तु एक निवेदन करों आर बार ।
विचार करिया ताहा कर अङ्गीकार ॥ ३५॥

किन्तु—किन्तु; **एक**—एक; **निवेदन**—निवेदन; **करों**—मैं करता हूँ; **आर बार**—दुबारा; **विचार**—विचार; **करिया**—करके; **ताहा**—वह; **कर**—करो; **अङ्गीकार**—स्वीकार।

अनुवाद

"फिर भी मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूँ। कृपया इस पर विचार करें और यदि उचित समझें, तो स्वीकार कर लें।

কৌপীন, বহির্বাস আর জল-পাত্র ।
আর কিছু নাহি যাবে, সবে এই মাত্র ॥ ৩৬॥

कौपीन, बहिर्वास आर जल-पात्र ।
आर किछु नाहि ग्राबे, सबे एइ मात्र ॥ ३६ ॥

कौपीन—लंगोटी; **बहिर्-वास**—बाहरी वस्त्र; **आर**—और; **जल-पात्र**—जलपात्र; **आर किछु**—और कुछ; **नाहि**—नहीं; **ग्राबे**—जायेगा; **सबे**—सब; **एइ**—यह; **मात्र**—मात्र।

अनुवाद

"आप अपने साथ एक लँगोटा, बाह्य वस्त्र तथा एक जलपात्र लें। आप इससे अधिक कुछ भी न लें।

तोमार दुई हस्त बद्ध नाम-गणने ।
जल-पात्र-बहिर्वास बहिबे केमने ॥ ३७ ॥
तोमार दुइ हस्त बद्ध नाम-गणने ।
जल-पात्र-बहिर्वास वहिबे केमने ॥ ३७ ॥

तोमार—आपके; **दुइ**—दोनों; **हस्त**—हाथ; **बद्ध**—लगेंगे; **नाम**—पावन नाम; **गणने**—गिनने में; **जल-पात्र**—जलपात्र; **बहिर्-वास**—बाहर का वस्त्र; **वहिबे**—उठायेंगे; **केमने**—कैसे।

अनुवाद

"जब आपके दोनों हाथ सदैव नाम-जप तथा पवित्र नाम जप की गिनती करने में लगे रहेंगे, तो आप जलपात्र तथा बाह्य वस्त्रों को किस प्रकार ले जायेंगे?

तात्पर्य

इस श्लोक से स्पष्ट है कि चैतन्य महाप्रभु नित्यप्रति नामों की निश्चित संख्या का जप किया करते थे। छः गोस्वामी भी श्री चैतन्य महाप्रभु के पदचिह्नों पर चलते थे, और हरिदास ठाकुर भी इस सिद्धान्त का पालन करते थे। श्रील रूप गोस्वामी, श्रील सनातन गोस्वामी, श्रील रघुनाथ भट्ट गोस्वामी, श्रील जीव गोस्वामी, श्रील गोपाल भट्ट गोस्वामी तथा श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी—इन छः गोस्वामियों के विषय में श्रीनिवास आचार्य ने पुष्टि की है—*संख्यापूर्वकनामगाननतिभिः* (*षड् गोस्वामी अष्टक* ६)। श्री चैतन्य महाप्रभु ने अन्य कर्तव्यों के अतिरिक्त नित्य निश्चित संख्या में पवित्र नाम-जप की पद्धति

का सूत्रपात किया। जैसाकि इस श्लोक (*तोमार दुइ हस्त बद्ध नामगणने*) से पुष्टि होती है, चैतन्य महाप्रभु अपनी अँगुलियों पर नाम गिनते थे। एक हाथ जप में लगा रहता था, तो दूसरा हाथ जप की संख्या बताता था। इसका समर्थन *चैतन्य-चन्द्रामृत* से तथा श्रील रूप गोस्वामी-कृत *स्तवमाला* से होता है :

बध्नन् प्रेमभरप्रकम्पितकरो ग्रन्थीन् कटीडोरकैः ।
संख्यातुं निज-लोकमङ्गलहरेकृष्णेति नाम्नां जपन् ॥
(*चैतन्य चन्दामृत* १६)

हरे कृष्णेत्युच्चैः स्फुरितरसनो नामगणना-
कृतग्रन्थिश्रेणिसुभगकटिसूत्रोज्ज्वलकरः ।
(*प्रथम-चैतन्याष्टक* ५)

अतएव श्री चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी भक्तों को नित्य कम-से-कम सोलह माला जप करना चाहिए और अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ ने इसी संख्या की संस्तुति की है। हरिदास ठाकुर नित्य ३ लाख नाम का जाप करते थे। १६ माला का अर्थ है लगभग २८००० नाम। हरिदास ठाकुर या अन्य गोस्वामियों की नकल करने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु प्रत्येक भक्त के लिए प्रतिदिन निश्चित संख्या के नाम-जप करना अनिवार्य है।

প্রেমাবেশে পথে তুমি হবে অচেতন ।
এ-সব সামগ্রী তোমার কে করে রক্ষণ ॥ ৩৮ ॥

प्रेमावेशे पथे तुमि हबे अचेतन ।
ए-सब सामग्री तोमार के करे रक्षण ॥ ३८ ॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **पथे**—मार्ग में; **तुमि**—आप; **हबे**—होंगे; **अचेतन**—अचेत; **ए-सब**—यह सब; **सामग्री**—सामान की; **तोमार**—आपके; **के**—कौन; **करे**—करेगा; **रक्षण**—रक्षा।

अनुवाद

"जब आप रास्ते में भगवत्प्रेम के आवेश में अचेत हो जायेंगे, तो आपके सामान की—जलपात्र, वस्त्र आदि की रक्षा कौन करेगा?"

'कृष्णदास'-नामे एई सरल ब्राह्मण ।
इँहो सङ्गे करि' लह, धर निवेदन ॥३९॥

'कृष्णदास'-नामे एइ सरल ब्राह्मण ।
इँहो सङ्गे करि' लह, धर निवेदन ॥ ३९ ॥

कृष्ण-दास-नामे—कृष्णदास नामक; **एइ**—यह; **सरल**—सरल; **ब्राह्मण**—ब्राह्मण; **इँहो**—इसे; **सङ्गे**—आपके साथ; **करि'**—लेकर; **लह**—ले जाओ; **धर**—जरा स्वीकार करो; **निवेदन**—प्रार्थना।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु ने आगे कहा, "यह कृष्णदास नामक एक सीधासादा ब्राह्मण है। कृपया आप इसे अपने साथ ले जाएँ। यही मेरी विनती है।

तात्पर्य

यह कृष्णदास काला कृष्णदास के नाम से जाना जाता है, किन्तु यह वह काला कृष्णदास नहीं है, जिसका उल्लेख आदिलीला, अध्याय ११, श्लोक ३७ में हुआ है। आदिलीला के ग्यारहवें अध्याय में उल्लिखित काला कृष्णदास बारह गोपालों में से एक हैं, जो श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का पोषण करने के लिये प्रकट हुए। वे नित्यानन्द प्रभु के महान् भक्त के रूप में जाने जाते हैं। जो काला कृष्णदास नामक ब्राह्मण महाप्रभु के साथ दक्षिण भारत और बाद में बंगाल भी गया, उसका उल्लेख मध्यलीला, अध्याय १०, श्लोक ६२-७९ में हुआ है। इन दोनों को एक नहीं समझना चाहिए।

जल-पात्र-वस्त्र वहि' तोमा-सङ्गे यावे ।
ये तोमार इच्छा, कर, किछु ना बलिबे ॥४०॥

जल-पात्र-वस्त्र वहि' तोमा-सङ्गे याबे ।
ये तोमार इच्छा, कर, किछु ना बलिबे ॥ ४० ॥

जल-पात्र—जलपात्र; **वस्त्र**—और वस्त्र; **वहि'**—उठाकर; **तोमा-सङ्गे**—आपके साथ; **याबे**—जायेगा; **ये**—जो कुछ; **तोमार इच्छा**—आपकी इच्छा; **कर**—आप करो; **किछु ना बलिबे**—वह कुछ नहीं बोलेगा।

अनुवाद

"वह आपका जलपात्र तथा वस्त्र वहन करेगा। आप चाहे जो भी करेंगे, वह एक शब्द भी नहीं बोलेगा।"

তবে তাঁর বাক্য প্রভু করি' অঙ্গীকারে ।
তাহা-সবা লঞা গেলা সার্বভৌম-ঘরে ॥ ৪১ ॥

তবে তাঁর বাক্য প্রভু করি' অঙ্গীকারে ।
তাহা-সবা লঞা গেলা সার্বভৌম-ঘরে ॥ ৪১ ॥

তবে—तत्पश्चात्; **তাঁর**—नित्यानन्द प्रभु के; **বাক্য**—शब्द; **প্রভু**—चैतन्य महाप्रभु; **করি'**—करके; **অঙ্গীকারে**—स्वीकार; **তাহা-সবা**—वे सब; **লঞা**—लेकर; **গেলা**—गये; **সার্বভৌম-ঘরে**—सार्वभौम भट्टाचार्य के घर।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु के अनुरोध को मानकर भगवान् चैतन्य ने अपने सारे भक्तों को अपने साथ लिया और वे सार्वभौम भट्टाचार्य के घर गये।

নমস্করি' সার্বভৌম আসন নিবেদিল ।
সবাকারে মিলি' তবে আসনে বসিল ॥ ৪২ ॥

নমস্করি' সার্বভৌম আসন নিবেদিল ।
সবাকারে মিলি' তবে আসনে বসিল ॥ ৪২ ॥

নমস্করি'—नमस्कार करके; **সার্বভৌম**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **আসন**—आसन; **নিবেদিল**—पेश किया; **সবাকারে**—उन सबको; **মিলি'**—मिलकर; **তবে**—उसके बाद; **আসনে বসিল**—अपना आसन ग्रहण किया।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने उनके प्रविष्ट होते ही महाप्रभु को नमस्कार किया और उन्हें बैठने को आसन दिया। फिर अन्य सारे भक्तों को बैठाने के बाद भट्टाचार्य स्वयं बैठे।

নানা কৃষ্ণ-বার্তা কহি' কহিল তাঁহারে ।
'তোমার ঠাঞি আইলাঁ আজ্ঞা মাগিবারে ॥ ৪৩ ॥

नाना कृष्ण-वार्ता कहि' कहिल ताँहारे ।
'तोमार ठाञि आइलाँ आज्ञा मागिबारे ॥ ४३ ॥

नाना—विविध; **कृष्ण-वार्ता**—कृष्ण-कथाओं की; **कहि'**—चर्चा करके; **कहिल**—उन्होंने सूचित किया; **ताँहारे**—सार्वभौम भट्टाचार्य को; **तोमार ठाञि**—आपके पास; **आइलाँ**—मैं आ गया हूँ; **आज्ञा**—आज्ञा; **मागिबारे**—मांगने के लिए।

अनुवाद

भगवान् कृष्ण विषयक विविध वार्ताएँ करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य को बतलाया, "मैं तो आपके यहाँ आपका आदेश प्राप्त करने आया हूँ।

सन्न्यास करि' विश्वरूप गियाछे दक्षिणे ।
अवश्य करिब आमि ताँर अन्वेषणे ॥ ४४ ॥
सन्न्यास करि' विश्वरूप गियाछे दक्षिणे ।
अवश्य करिब आमि ताँर अन्वेषणे ॥ ४४ ॥

सन्न्यास करि'—संन्यास लेने के बाद; **विश्वरूप**—विश्वरूप (श्री चैतन्य महाप्रभु के बड़े भाई); **गियाछे**—चला गया है; **दक्षिणे**—दक्षिण भारत को; **अवश्य**—अवश्य; **करिब**—करूँगा; **आमि**—मैं; **ताँर**—उसकी; **अन्वेषणे**—खोज।

अनुवाद

"मेरा बड़ा भाई विश्वरूप संन्यास लेकर दक्षिण भारत चला गया है। अब मुझे उसकी खोज करने जाना है।

आज्ञा देह, अवश्य आमि दक्षिणे चलिब ।
तोमार आज्ञाते सुखे लेउटि' आसिब' ॥ ४५ ॥
आज्ञा देह, अवश्य आमि दक्षिणे चलिब ।
तोमार आज्ञाते सुखे लेउटि' आसिब' ॥ ४५ ॥

आज्ञा देह—कृपया आज्ञा दो; **अवश्य**—अवश्य; **आमि**—मैं; **दक्षिणे**—दक्षिण भारत में; **चलिब**—जाऊँगा; **तोमार**—आपकी; **आज्ञाते**—आज्ञा से; **सुखे**—सुखपूर्वक; **लेउटि'**—लौटकर; **आसिब**—मैं आऊँगा।

अनुवाद

"कृपया मुझे जाने की अनुमति दें, क्योंकि मुझे दक्षिण भारत की यात्रा करनी है। आपकी आज्ञा से मैं शीघ्र ही सुखपूर्वक वापस लौट आऊँगा।"

শুনি' সার্বভৌম হৈলা অত্যন্ত কাতর ।
চরণে ধরিয়া কহে বিষাদ-উত্তর ॥ ৪৬ ॥

শুনি' সার্বভৌম হৈলা অত্যন্ত কাতর ।
চরণে ধরিয়া কহে বিষাদ-উত্তর ॥ ৪৬ ॥

शुनि'—यह सुनकर; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **हैला**—हो गये; **अत्यन्त**—अत्यन्त; **कातर**—विक्षिप्त; **चरणे**—चरणकमल; **धरिया**—पकड़कर; **कहे**—कहने लगे; **विषाद**—दुःख का; **उत्तर**—उत्तर।

अनुवाद

यह सुनकर सार्वभौम भट्टाचार्य अत्यन्त क्षुब्ध हो उठे। उन्होंने चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल पकड़ लिए और विषाद से पूर्ण यह उत्तर दिया।

'বহু-জন্মের পুণ্য-ফলে পাইনু তোমার সঙ্গ ।
হেন-সঙ্গ বিধি মোর করিলেক ভঙ্গ ॥ ৪৭ ॥

'বহু-জন্মের পুণ্য-ফলে পাইনু তোমার সঙ্গ ।
হেন-সঙ্গ বিধি মোর করিলেক ভঙ্গ ॥ ৪৭ ॥

बहु-जन्मेर—बहुत जन्मों के; **पुण्य-फले**—पुण्य फल के रूप में; **पाइनु**—मुझे मिला; **तोमार**—आपका; **सङ्ग**—संग; **हेन-सङ्ग**—ऐसी संगति; **विधि**—भाग्य; **मोर**—मेरी; **करिलेक**—की है; **भङ्ग**—भंग।

अनुवाद

"मुझे कुछ पुण्यकर्मों के कारण अनेक जन्मों के बाद आपका संग मिला था। अब विधाता इस अमूल्य संग का विच्छेद कर रहा है।

শিরে বজ্র পড়ে যদি, পুত্র মরি' যায় ।
তাহা সহি, তোমার বিচ্ছেদ সহন না যায় ॥ ৪৮ ॥

शिरे वज्र पड़े यदि, पुत्र मरि' याय ।
ताहा सहि, तोमार विच्छेद सहन ना याय ॥ ४८ ॥

शिरे—सिर पर; **वज्र**—वज्र; **पड़े**—गिर जाए; **यदि**—यदि; **पुत्र**—पुत्र; **मरि'**—मर; **याय**—जाए; **ताहा**—वह; **सहि**—मैं सहन कर सकता हूँ; **तोमार**—आपका; **विच्छेद**—वियोग; **सहन**—सहन; **ना याय**—नहीं किया जा सकता।

अनुवाद

"यदि मेरे सिर पर वज्रपात हो जाए अथवा मेरा पुत्र मर जाए, तो मैं उसे सहन कर सकता हूँ। किन्तु मैं आपके वियोग के दुःख को नहीं सह सकता।

स्वतन्त्र-ईश्वर तुमि करिबे गमन ।
दिन कथो रह, देखि तोमार चरण' ॥ ४९ ॥

स्वतन्त्र-ईश्वर तुमि करिबे गमन ।
दिन कथो रह, देखि तोमार चरण' ॥ ४९ ॥

स्वतन्त्र-ईश्वर—स्वतंत्र भगवान्; **तुमि**—आप; **करिबे**—करोगे; **गमन**—प्रस्थान; **दिन**—दिन; **कथो**—कुछ; **रह**—कृपया रुक जाओ; **देखि**—मैं देख लूँ; **तोमार चरण**—आपके चरणकमल।

अनुवाद

"हे प्रभु, आप स्वतन्त्र पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं। आपका जाना निश्चित है, यह मैं जानता हूँ। फिर भी मैं आपसे कुछ दिन और रुकने के लिए निवेदन कर रहा हूँ, जिससे आपके चरणकमलों का दर्शन कर सकूं।"

ताहार विनये प्रभुर शिथिल हैल मन ।
रहिल दिवस कथो, ना कैल गमन ॥ ५० ॥

ताहार विनये प्रभुर शिथिल हैल मन ।
रहिल दिवस कथो, ना कैल गमन ॥ ५० ॥

ताहार—सार्वभौम भट्टाचार्य की; **विनये**—विनय पर; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **शिथिल**—शिथिल; **हैल**—हो गया; **मन**—मन; **रहिल**—रुक गये; **दिवस**—दिन; **कथो**—कुछ; **ना**—नहीं; **कैल**—किया; **गमन**—प्रस्थान।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य की विनती सुनकर, चैतन्य महाप्रभु दयार्द्र हो गये। वे कुछ दिन और रुके रहे और प्रस्थान नहीं किया।

भट्टाचार्य आग्रह करि' करेन निमन्त्रण ।
गृहे पाक करि' प्रभुके करा'न भोजन ॥५१॥
भट्टाचार्य्र आग्रह करि' करेन निमन्त्रण ।
गृहे पाक करि' प्रभुके करा'न भोजन ॥५१॥

भट्टाचार्य्र—सार्वभौम भट्टाचार्य; **आग्रह**—आग्रह; **करि'**—करके; **करेन**—किया; **निमन्त्रण**—निमंत्रण; **गृहे**—घर पर; **पाक**—पकवान; **करि'**—बनाकर ; **प्रभुके**—चैतन्य महाप्रभु को; **करा'न**—कराया; **भोजन**—भोजन।

अनुवाद

भट्टाचार्य ने बड़े ही आग्रहपूर्वक चैतन्य महाप्रभु को अपने घर आमन्त्रित किया और उन्हें अच्छी तरह भोजन कराया।

तांहार ब्राह्मणी, तांर नाम—'षाठीर माता' ।
राद्धि' भिक्षा देन तेंहो, आश्चर्य तांर कथा ॥५२॥
ताँहार ब्राह्मणी, ताँर नाम—'षाठीर माता' ।
रान्धि' भिक्षा देन तेंहो, आश्चर्य्र ताँर कथा ॥५२॥

ताँहार ब्राह्मणी—उनकी पत्नी; **ताँर नाम**—उनका नाम; **षाठीर माता**—षाठी माता; **रान्धि'**—रसोई पकाकर; **भिक्षा देन**—भोजन दिया; **तेंहो**—उसने; **आश्चर्य्र**—आश्चर्यजनक; **ताँर**—उसका; **कथा**—व्याख्यान।

अनुवाद

भट्टाचार्य की पत्नी का नाम षाठीमाता (षाठी की माता) था। उन्होंने ही भोजन पकाया। इन लीलाओं का वर्णन अत्यन्त आश्चर्यजनक है।

आगे त' कहिब ताहा करिया विस्तार ।
एबे कहि प्रभुर दक्षिण-यात्रा-समाचार ॥५३॥

आगे त' कहिब ताहा करिया विस्तार ।
एबे कहि प्रभुर दक्षिण-यात्रा-समाचार ॥ ५३ ॥

आगे—बाद में; **त'**—निस्सन्देह; **कहिब**—मैं कहूँगा; **ताहा**—वे सब घटनाएँ; **करिया**—करके; **विस्तार**—विस्तार; **एबे**—अब; **कहि**—मैं वर्णन करता हूँ; **प्रभुर**—चैतन्य महाप्रभु का; **दक्षिण**—दक्षिण भारत में; **यात्रा**—भ्रमण का; **समाचार**—व्याख्यान, वर्णन।

अनुवाद

बाद में इसका विस्तार से वर्णन करूँगा, किन्तु इस समय मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की दक्षिण भारत यात्रा का वर्णन करना चाहता हूँ।

दिन पाँच रहि' प्रभु भट्टाचार्य-स्थाने ।
चलिबार लागि' आज्ञा मागिला आपने ॥ ५४ ॥
दिन पाँच रहि' प्रभु भट्टाचार्य-स्थाने ।
चलिबार लागि' आज्ञा मागिला आपने ॥ ५४ ॥

दिन पाँच—पाँच दिन; **रहि'**—रुककर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भट्टाचार्य-स्थाने**—सार्वभौम भट्टाचार्य के घर पर; **चलिबार लागि'**—प्रस्थान करने हेतु; **आज्ञा**—आज्ञा; **मागिला**—माँगी; **आपने**—स्वयं।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य के घर पर पाँच दिन रुककर श्री चैतन्य महाप्रभु ने दक्षिण भारत के लिए प्रस्थान करने हेतु स्वयं अनुमति माँगी।

प्रभुर आग्रहे भट्टाचार्य सम्मत हइला ।
प्रभु ताँरे लञा जगन्नाथ-मन्दिरे गेला ॥ ५५ ॥
प्रभुर आग्रहे भट्टाचार्य सम्मत हइला ।
प्रभु ताँरे लञा जगन्नाथ-मन्दिरे गेला ॥ ५५ ॥

प्रभुर आग्रहे—श्री चैतन्य महाप्रभु की उत्सुकता से; **भट्टाचार्य**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **सम्मत हइला**—मान गये; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उनको (सार्वभौम भट्टाचार्य को); **लञा**—लेकर; **जगन्नाथ-मन्दिरे**—भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर; **गेला**—गये।

अनुवाद

भट्टाचार्य की अनुमति पाकर श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथजी के मन्दिर में दर्शन करने गये। वे अपने साथ भट्टाचार्य को लेते गये।

दर्शन करि' ठाकुर-पाश आज्ञा मागिला ।
पूजारी प्रभुरे माला-प्रसाद आनि' दिला ॥५६॥

दर्शन करि' ठाकुर-पाश आज्ञा मागिला ।
पूजारी प्रभुरे माला-प्रसाद आनि' दिला ॥५६॥

दर्शन करि'—दर्शन करके; **ठाकुर-पाश**—भगवान् से; **आज्ञा मागिला**—आज्ञा माँगी; **पूजारी**—पुजारी; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **माला**—माला; **प्रसाद**—अन्न प्रसाद; **आनि'**—लाकर; **दिला**—दिया।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करके श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनसे भी आज्ञा माँगी। तब पुजारी ने महाप्रभु को तुरन्त प्रसाद और माला लाकर दी।

आज्ञा-माला पाञा हर्षे नमस्कार करि' ।
आनन्दे दक्षिण-देशे चले गौरहरि ॥५७॥

आज्ञा-माला पाञा हर्षे नमस्कार करि' ।
आनन्दे दक्षिण-देशे चले गौरहरि ॥५७॥

आज्ञा-माला—आज्ञा की माला; **पाञा**—पाकर; **हर्षे**—हर्षपूर्वक; **नमस्कार**—नमस्कार; **करि'**—करके; **आनन्दे**—अत्यन्त आनन्दपूर्वक; **दक्षिण-देशे**—दक्षिण भारत को; **चले**—जाते हैं; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

माला के रूप में भगवान् जगन्नाथजी की आज्ञा पाकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें नमस्कार किया और अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर दक्षिण भारत जाने की तैयारी की।

ভট্টাচার্য-সঙ্গে আর যত নিজ-গণ ।
জগন্নাথ প্রদক্ষিণ করি' করিলা গমন ॥৫৮॥

भट्टाचार्य्य-सङ्गे आर यत निज-गण ।
जगन्नाथ प्रदक्षिण करि' करिला गमन ॥५८॥

भट्टाचार्य्य-सङ्गे—सार्वभौम भट्टाचार्य के साथ; **आर**—और; **यत**—सब; **निज-गण**—निजी भक्त; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **प्रदक्षिण**—प्रदक्षिणा; **करि'**—करके; **करिला**—किया; **गमन**—प्रस्थान।

अनुवाद

अपने निजी संगियों तथा सार्वभौम भट्टाचार्य के साथ श्री चैतन्य महाप्रभु ने जगन्नाथजी की वेदी की प्रदक्षिणा की। तत्पश्चात् वे अपनी दक्षिण भारत की यात्रा पर रवाना हो गये।

সমুদ্র-তীরে তীরে আলালনাথ-পথে ।
সার্বভৌম কহিলেন আচার্য-গোপীনাথে ॥৫৯॥

समुद्र-तीरे तीरे आलालनाथ-पथे ।
सार्वभौम कहिलेन आचार्य्य-गोपीनाथे ॥५९॥

समुद्र-तीरे—समद्र तट पर; **तीरे**—तट पर; **आलालनाथ-पथे**—आलालनाथ मन्दिर की ओर जानेवाले मार्ग पर; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य ने; **कहिलेन**—कहा; **आचार्य्य-गोपीनाथे**—गोपीनाथ आचार्य को।

अनुवाद

जब महाप्रभु समुद्र-तट पर स्थित आलालनाथ के मार्ग पर जा रहे थे, तब सार्वभौम भट्टाचार्य ने गोपीनाथ आचार्य को निम्नलिखित आदेश दिया।

চারি কোপীন-বহির্বাস রাখিয়াছি ঘরে ।
তাহা, প্রসাদান্ন, লঞা আইস বিপ্র-দ্বারে ॥৬০॥

चारि कोपीन-बहिर्वास राखियाछि घरे ।
ताहा, प्रसादान्न, लञा आइस विप्र-द्वारे ॥६०॥

चारि कोपीन-बहिर्वास—कोपीन तथा बाह्य वस्त्रों की चार जोड़ी; **राखियाछि**—मैंने रखे हैं; **घरे**—घर पर; **ताहा**—वे; **प्रसाद-अन्न**—भगवान् जगन्नाथ का अन्न-प्रसाद; **लञा**—लेकर; **आइस**—आ जाओ; **विप्र-द्वारे**—किसी ब्राह्मण के द्वारा।

अनुवाद

"मैंने घर पर कौपीन तथा बाहरी वस्त्रों के जो चार जोड़े रख छोड़े हैं, उन्हें लाओ और साथ में कुछ जगन्नाथजी का प्रसाद भी लेते आओ। तुम किसी ब्राह्मण की सहायता से ये चीजें अपने साथ लेते आना।"

तबे सार्वभौम कहे प्रभुर चरणे ।
अवश्य पालिबे, प्रभु, मोर निवेदने ॥ ६१ ॥

तबे सार्वभौम कहे प्रभुर चरणे ।
अवश्य पालिबे, प्रभु, मोर निवेदने ॥ ६१ ॥

तबे—तत्पश्चात्; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य ने; **कहे**—कहा; **प्रभुर चरणे**—महाप्रभु के चरणकमलों में; **अवश्य**—अवश्य; **पालिबे**—आप रखोगे, मानो; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **मोर**—मेरा; **निवेदने**—निवेदन।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु विदा हो रहे थे, तो सार्वभौम भट्टाचार्य ने उनके चरणकमलों पर यह निवेदन किया, "हे प्रभु, मेरी एक अन्तिम प्रार्थना है और मुझे आशा है कि आप उसे अवश्य पूरी करेंगे।

'रामानन्द राय' आछे गोदावरी-तीरे ।
अधिकारी हयेन तेंहो विद्यानगरे ॥ ६२ ॥

'रामानन्द राय' आछे गोदावरी-तीरे ।
अधिकारी हयेन तेंहो विद्यानगरे ॥ ६२ ॥

रामानन्द राय—रामानन्द राय; **आछे**—हैं; **गोदावरी-तीरे**—गोदवरी नटी के तट पर; **अधिकारी**—एक जिम्मेदार अधिकारी; **हयेन**—हैं; **तेंहो**—वे; **विद्यानगरे**—विद्यानगर नामक नगर में।

अनुवाद

"गोदावरी नदी के किनारे स्थित विद्यानगर नामक नगरी में रामानन्द राय नामक एक जिम्मेदार सरकारी अधिकारी हैं।

तात्पर्य

भक्तिविनोद ठाकुर ने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में लिखा है कि विद्यानगर आजकल पोरबन्दर के नाम से विख्यात है। पश्चिमी भारत के गुजरात प्रान्त में भी एक अन्य पोरबन्दर है।

शूद्र विषयि-ज्ञाने उपेक्षा ना करिबे ।
आमार वचने ताँरे अवश्य मिलिबे ॥ ६३॥

शूद्र विषयि-ज्ञाने उपेक्षा ना करिबे ।
आमार वचने ताँरे अवश्य मिलिबे ॥ ६३॥

शूद्र—शूद्र; **विषयि-ज्ञाने**—एक सांसारी मनुष्य होने के नाते; **उपेक्षा**—उपेक्षा; **ना करिबे**—नहीं करें; **आमार**—मेरे; **वचने**—अनुरोध पर; **ताँरे**—उनको; **अवश्य**—अवश्य; **मिलिबे**—मिलें।

अनुवाद

"आप कृपया उन्हें भौतिक कार्यकलापों में व्यस्त रहने वाला शूद्र समझकर उनकी उपेक्षा न करें। मेरी विनती है कि आप उनसे अवश्य मिलें।"

तात्पर्य

वर्णाश्रम धर्म में शूद्र चौथा सामाजिक विभाग है। *परिचयात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्* (*भगवद्गीता* १८.४४)। शूद्रों का कार्य है कि वे तीन उच्च वर्णों—ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा वैश्यों की सेवा करें। श्री रामानन्द राय करण जाति के थे, जो बंगाल में कायस्थ जाति के बराबर है। यह जाति सारे भारत में शूद्र तुल्य मानी जाती है। कहा जाता है कि उत्तर भारत से जितने ब्राह्मण बंगाल आते थे, वे बंगाली कायस्थों को पहले अपने यहाँ नौकर रख लेते थे। बाद में क्लर्क-वर्ग बंगाल में कायस्थ हो गये। अब कायस्थों में अनेक जातियाँ हो गई हैं। बंगाल में कभी-कभी कहा जाता है कि जो लोग किसी विशिष्ट जाति के नहीं हैं, वे सब कायस्थ होते हैं। यद्यपि कायस्थों या करणों को शूद्र माना

जाता है, किन्तु ये लोग अत्यन्त बुद्धिमान तथा काफी शिक्षित होते हैं। इनमें से अधिकांश वकील या राजनीतिज्ञ होते हैं। इसलिए कभी-कभी बंगाल में कायस्थों को क्षत्रिय माना जाता है। किन्तु उड़ीसा में करण समेत कायस्थ जाति को शूद्र वर्ग माना जाता है। श्रील रामानन्द राय इसी करण जाति के थे, अतएव वे शूद्र माने जाते थे। वे उड़ीसा के राजा महाराज प्रतापरुद्र के राज्य के अन्तर्गत दक्षिण भारत के राज्यपाल थे। दूसरे शब्दों में, सार्वभौम भट्टाचार्य ने श्री चैतन्य महाप्रभु को यह बतलाया कि यद्यपि रामानन्द राय शूद्र जाति के हैं, किन्तु हैं अत्यन्त जिम्मेदार सरकारी अधिकारी। जहाँ तक आध्यात्मिक उन्नति की बात है, भौतिकतावादी, राजनीतिज्ञ अथवा शूद्र सभी सामान्यतया अयोग्य होते हैं। इसलिए सार्वभौम भट्टाचार्य ने चैतन्य महाप्रभु से विनती की कि वे रामानन्द राय की उपेक्षा नहीं करें, क्योंकि वे शूद्र कुल में उत्पन्न होकर और भौतिकतावादी प्रतीत होने पर भी आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत हैं।

विषयी वह है, जो गृहस्थ जीवन में लिप्त रहकर केवल बीवी-बच्चों तथा सांसारिक इन्द्रियतृप्ति में रुचि रखता है। इन्द्रियों को या तो भौतिक भोग में या फिर भगवान् की सेवा में लगाइ जा सकती हैं। जो लोग भगवान् की सेवा में नहीं लगे हैं और केवल भौतिक इन्द्रियतृप्ति में ही रुचि रखते हैं, वे *विषयी* कहलाते हैं। श्रील रामानन्द राय सरकारी नौकरी करते थे और करण जाति के थे। वे निश्चित रूप से गेरुवा वस्त्र धारण करने वाले संन्यासी नहीं थे, किन्तु वे *परमहंस* गृहस्थ पद को प्राप्त थे। चैतन्य महाप्रभु का शिष्य बनने के पहले सार्वभौम भट्टाचार्य रामानन्द राय को एक सामान्य विषयी समझते थे, क्योंकि वे सरकारी नौकरी में लगे हुए गृहस्थ थे। किन्तु जब भट्टाचार्य को वैष्णव दर्शन का वास्तविक ज्ञान हुआ, तो वे रामानन्द राय के उच्च आध्यात्मिक पद को समझ सके; इसीलिए उन्होंने उन्हें *अधिकारी* कहा। *अधिकारी* वह है, जो कृष्ण के दिव्य विज्ञान को जानता है और उनकी सेवा में लगा रहता है। इसीलिए सारे गृहस्थ भक्त *दास अधिकारी* कहलाते हैं।

তোমার সঙ্গের যোগ্য তেঁহো এক জন ।
পৃথিবীতে রসিক ভক্ত নাহি তাঁর সম ॥৬৪॥

तोमार सङ्गेर योग्य तेंहो एक जन ।
पृथिवीते रसिक भक्त नाहि ताँर सम ॥ ६४॥

तोमार—आपके; **सङ्गेर**—संग के; **योग्य**—योग्य; **तेंहो**—वे (रामानन्द राय); **एक**—एक; **जन**—व्यक्ति; **पृथिवीते**—जगत् में; **रसिक**—दिव्य रसों में निपुण; **भक्त**—भक्त; **नाहि**—नहीं है; **ताँर सम**—उनके समान।

अनुवाद

सार्वभौम भट्टाचार्य ने आगे कहा, "रामानन्द राय आपकी संगति के लिए उपयुक्त व्यक्ति है। दिव्य रसों के ज्ञान के विषय में अन्य कोई भक्त उनकी बराबरी नहीं कर सकता।

পাণ্ডিত্য আর ভক্তি-রস,—দুঁহের তেঁহো সীমা ।
সম্ভাষিলে জানিবে তুমি তাঁহার মহিমা ॥৬৫॥

पाण्डित्य आर भक्ति-रस,—दुँहेर तेंहो सीमा ।
सम्भाषिले जानिबे तुमि ताँहार महिमा ॥ ६५॥

पाण्डित्य—पाण्डित्य, ज्ञान; **आर**—और; **भक्ति-रस**—भक्ति रस; **दुँहेर**—इन दोनों की; **तेंहो**—वह; **सीमा**—सीमा; **सम्भाषिले**—जब आप उनसे बात करेंगे; **जानिबे**—जान जाओगे; **तुमि**—आप; **ताँहार**—उनकी; **महिमा**—महिमाएँ।

अनुवाद

"वे अत्यन्त विद्वान एवं भक्ति-रस में दक्ष हैं। वे वास्तव में अत्यन्त उन्नत हैं और जब आप उनसे बात करेंगे, तो देखेंगे कि वे कितने महिमावान हैं।

অলৌকিক বাক্য চেষ্টা তাঁর না বুঝিয়া ।
পরিহাস করিয়াছি তাঁরে 'বৈষ্ণব' বলিয়া ॥৬৬॥

अलौकिक वाक्य चेष्टा ताँर ना बुझिया ।
परिहास करियाछि ताँरे 'वैष्णव' बलिया ॥ ६६॥

अलौकिक—असाधारण; **वाक्य**—शब्द; **चेष्टा**—काम; **ताँर**—उनकी; **ना**—बिना; **बुझिया**—समझे; **परिहास**—परिहास; **करियाछि**—मैंने किया है; **ताँरे**—उनका; **वैष्णव**—वैष्णव; **बलिया**—जैसे।

अनुवाद

"जब पहले पहल मैंने रामानन्द राय से बात की थी, तो मुझे इसका अनुभव नहीं हो पाया था कि उनकी बातचीत तथा चेष्टाएँ दिव्य और असामान्य हैं। मैंने उनका परिहास किया था, क्योंकि वे वैष्णव थे।"

तात्पर्य

जो भी वैष्णव या भगवान् का शुद्ध भक्त नहीं होता, वह भौतिकतावादी है। जो वैष्णव श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेशों के अनुसार जीवन बिताता है, वह निश्चय ही भौतिकतावादी स्तर पर नहीं होता। चैतन्य का अर्थ है "आध्यात्मिक बल।" श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे कार्यकलाप आध्यात्मिक ज्ञान के स्तर पर होते थे; अतएव जो आध्यात्मिक स्तर पर हैं, वे ही उनके कार्यकलापों को समझ सकते हैं। जो भौतिकतावादी व्यक्ति इन कार्यकलापों को नहीं समझ सकते, वे सामान्यतया *कर्मी* या *ज्ञानी* कहलाते हैं। *ज्ञानी* कोरे तर्कवादी हैं, जो केवल यही जानने में लगे रहते हैं कि आत्मा क्या है और पदार्थ क्या है। उनकी पद्धति होती है, *नेतिनेति* कहने की—"यह आत्मा नहीं है, यह ब्रह्म नहीं है।" *ज्ञानी* मन्दबुद्धि कर्मियों से कुछ उन्नत होते हैं, क्योंकि कर्मी केवल इन्द्रियतृप्ति में रुचि लेते हैं। वैष्णव बनने के पूर्व सार्वभौम भट्टाचार्य एक मानसिक तर्कवादी अर्थात् *ज्ञानी* थे, इसीलिए वे सर्वदा वैष्णवों का मजाक उड़ाया करते थे। वैष्णव कभी भी ज्ञानियों की चिन्तन पद्धति को नहीं मानता। ज्ञानी तथा कर्मी दोनों अपने अपूर्ण ज्ञान के लिए प्रत्यक्ष इन्द्रिय-अनुभूति पर निर्भर रहते हैं। कर्मी प्रत्यक्ष अनुभूति किये बिना किसी बात को नहीं मानते और ज्ञानी केवल परिकल्पनाएँ प्रस्तुत करते रहते हैं। किन्तु वैष्णव या भगवान् के शुद्ध भक्त न तो प्रत्यक्ष इन्द्रिय अनुभूति की विधि का, न ही मानसिक चिन्तन की विधि का पालन करते हैं। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के दास होने के कारण वे सीधे भगवान् से ज्ञान प्राप्त करते हैं, जैसाकि *भगवद्गीता* में भगवान् कहते हैं या कभी-कभी वे भीतर से चैत्य-गुरु के रूप में ज्ञान प्रदान करते हैं। जैसाकि *भगवद्गीता* (१०.१०) में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं :

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

"जो लोग निरन्तर प्रेमपूर्वक मेरी सेवा करने में समर्पित रहते हैं, उन्हें मैं बुद्धि प्रदान करता हूँ जिससे वे मेरे पास आ सकते हैं।"

यह माना जाता है कि वेद भगवान् द्वारा कहे गये हैं। उनकी पहली अनुभूति ब्रह्मा को हुई, जो इस ब्रह्माण्ड के प्रथम जीव हैं (*तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये*)। ज्ञान प्राप्त करने की हमारी विधि परम्परा-विधि है, जिसमें कृष्ण से ब्रह्मा को, ब्रह्मा से नारद, व्यास, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा छः गोस्वामियों को ज्ञान प्राप्त हुआ है। गुरु-शिष्य परम्परा से ब्रह्मा को आदि पुरुष कृष्ण ने भीतर से ज्ञान प्रदान किया। हमारा ज्ञान इसीलिए पूर्ण है, क्योंकि यह गुरु से शिष्य को हस्तान्तरित होता है। वैष्णव सदैव भगवान् की दिव्य प्रममयी सेवा में लगा रहता है, अतएव ज्ञानी या कर्मीजन में से कोई भी उसके कार्यों को नहीं समझ सकता। कहा भी गया है—*वैष्णवेर क्रियामुद्रा विज्ञेह ना बुझय*—इन्द्रिय-ज्ञान पर निर्भर अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति भी वैष्णव के कार्यों को नहीं समझ सकता। श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा वैष्णव-मत में दीक्षित होने के बाद ही सार्वभौम भट्टाचार्य को यह समझ आया कि उन्होंने रामानन्द राय को समझने में क्या भूल की है, क्योंकि वे अत्यन्त विद्वान थे और उनके सारे प्रयत्न भगवान् की दिव्य प्रेमाभक्ति सम्पन्न करने की दिशा में उन्मुख थे।

তোমার প্রসাদে এবে জানিনু তাঁর তত্ত্ব ।
সম্ভাষিলে জানিবে তাঁর যেমন মহত্ত্ব ॥ ৬৭ ॥

तोमार प्रसादे एबे जानिनु ताँर तत्त्व ।
सम्भाषिले जानिबे ताँर ग्रेमन महत्त्व ॥ ६७ ॥

तोमार प्रसादे—आपकी कृपा से; **एबे**—अब; **जानिनु**—मैंने समझ लिया है; **ताँर**—उनका (रामानन्द राय का); **तत्त्व**—सत्य; **सम्भाषिले**—आपस में बातचीत करने से; **जानिबे**—आप जान जायेंगे; **ताँर**—उनका; **ग्रेमन**—ऐसा; **महत्त्व**—महत्त्व।

अनुवाद

भट्टाचार्य ने कहा, "आपकी कृपा से मैंने अब रामानन्द राय को वास्तव में समझा है। आप उनसे बातें करेंगे, तो आप भी उनकी महानता को स्वीकार करेंगे।"

অঙ্গীকার করি' প্রভু তাঁহার বচন ।
তাঁরে বিদায় দিতে তাঁরে কৈল আলিঙ্গন ॥ ৬৮ ॥

अङ्गीकार करि' प्रभु ताँहार वचन ।
ताँरे विदाय दिते ताँरे कैल आलिङ्गन ॥ ६८ ॥

अङ्गीकार करि'—यह प्रस्ताव मानकर; **प्रभु**—चैतन्य महाप्रभु; **ताँहार**—उनका (सार्वभौम भट्टाचार्य का); **वचन**—अनुरोध; **ताँरे**—उनको; **विदाय दिते**—विदा किया; **ताँरे**—उनका; **कैल**—किया; **आलिङ्गन**—आलिंगन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य के इस अनुरोध को मान लिया कि वे रामानन्द राय से अवश्य मिलें। महाप्रभु ने सार्वभौम से विदा लेते हुए उनका आलिंगन किया।

"ঘরে কৃষ্ণ ভজি' মোরে করিহ আশীর্বাদে ।
নীলাচলে আসি' যেন তোমার প্রসাদে" ॥ ৬৯ ॥

"घरे कृष्ण भजि' मोरे करिह आशीर्वादे ।
नीलाचले आसि' येन तोमार प्रसादे" ॥ ६९ ॥

घरे—घर पर; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **भजि'**—पूजा करके; **मोरे**—मुझे; **करिह**—दो; **आशीर्वादे**—आशीर्वाद; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी; **आसि'**—लौटकर; **येन**—ताकि; **तोमार**—आपकी; **प्रसादे**—दया से।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने भट्टाचार्य से कहा कि जब वे अपने घर में भगवान् कृष्ण की भक्ति में लगे हों, तब वे उन्हें आशीर्वाद देते रहें, जिससे सार्वभौम की कृपा से वे पुनः जगन्नाथ पुरी वापस आ सकें।

तात्पर्य : *करिह आशीर्वादे* का अर्थ है "आप मुझे आशीर्वाद देते रहें।" संन्यासी होने के कारण चैतन्य महाप्रभु चौथे आश्रम में थे और इसलिए अत्यन्त सम्मानित तथा पूज्य पद पर थे, जबकि गृहस्थ होने के कारण सार्वभौम भट्टाचार्य द्वितीय पद पर थे। अतएव उम्मीद तो यह की जाती है कि संन्यासी

गृहस्थ को आशीर्वाद दे, किन्तु महाप्रभु ने अपने व्यावहारिक आचरण के द्वारा एक गृहस्थ से आशीर्वाद देने की प्रार्थना की। इस घटना से श्री चैतन्य महाप्रभु की शिक्षा की विशिष्टता दिखाई देती है। उन्होंने भौतिक धारणाओं की परवाह न करते हुए हर व्यक्ति को समान पद प्रदान किया। उनका आन्दोलन सर्वथा आध्यात्मिक है। यद्यपि सार्वभौम भट्टाचार्य कहने को गृहस्थ थे, किन्तु वे इन्द्रियतृप्ति में रुचि रखने वाले तथाकथित कर्मियों से भिन्न थे। श्री चैतन्य महाप्रभु से दीक्षित हो जाने के बाद भट्टाचार्य आध्यात्मिक स्तर पर पूर्णतः अवस्थित थे। अतएव वे संन्यासी को भी आशीर्वाद देने में सक्षम थे। वे घर पर भी सदैव भगवान् की सेवा में लगे रहते थे। हमारी गुरु-शिष्य परम्परा में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के रूप में पूर्ण गृहस्थ-परमहंस का उदाहरण हमें प्राप्त है। उन्होंने अपनी पुस्तक *शरणागति* (३१.६) में कहा है—*ये दिन गृहे, भजन देखि', गृहेते गोलोक भाय।* जब भी कोई गृहस्थ अपने घर पर भगवान् की महिमा का गायन करता है, तो उसके सारे कार्य गोलोक वृन्दावन के कार्यों में परिणत हो जाते हैं अर्थात् उन आध्यात्मिक कार्यों में बदल जाते हैं जो कृष्ण के धाम, गोलोक वृन्दावन में सम्पन्न होते हैं। भौम वृन्दावन में अर्थात् इस ग्रह के वृन्दावन धाम में कृष्ण जो भी कार्यकलाप प्रदर्शित करते हैं, वे गोलोक वृन्दावन में सम्पन्न किये जाने वाले उनके कार्यों से भिन्न नहीं होते। कहीं पर भी वृन्दावन की यही सही अनुभूति है। हमने अपने कृष्णभावनामृत आन्दोलन में नव-वृन्दावन के कार्यकलापों का सूत्रपात किया है, जहाँ भक्त सदैव दिव्य कृष्ण-भक्ति में लगे रहते हैं और यह गोलोक वृन्दावन से भिन्न नहीं है। निष्कर्ष यह है कि जो कोई भी श्री चैतन्य महाप्रभु की परम्परा के अनुसार पूरी तरह कार्य करता है, वह संन्यासी को भी आशीर्वाद देने में सक्षम है, भले ही वह स्वयं गृहस्थ क्यों न हो। कोई संन्यासी किसी भी उन्नत पद पर क्यों न हो, उसे भगवान् की सेवा करके अपने आपको दिव्य पद तक ऊपर उठाना चाहिए। अपने वास्तविक आचरण द्वारा चैतन्य महाप्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य से आशीर्वाद माँगा। इस तरह उन्होंने दृष्टान्त प्रस्तुत किया कि वैष्णव के सामाजिक पद की परवाह न करते हुए किस तरह उसके आशीर्वाद की आशा की जानी चाहिए।

এত বলি' মহাপ্রভু করিলা গমন ।
মূর্চ্ছিত হঞা তাহাঁ পড়িলা সার্বভৌম ॥৭০॥

एत बलि' महाप्रभु करिला गमन ।
मूर्च्छित हञा ताहाँ पड़िला सार्वभौम ॥७०॥

एत बलि'—यह कहकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करिला**—किया; **गमन**—प्रस्थान; **मूर्च्छित**—मूर्च्छित; **हञा**—होकर; **ताहाँ**—वहाँ; **पड़िला**—गिर गये; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी यात्रा पर चल पड़े और उधर सार्वभौम भट्टाचार्य तुरन्त मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

তাঁরে উপেক্ষিয়া কৈল শীঘ্র গমন ।
কে বুঝিতে পারে মহাপ্রভুর চিত্ত-মন ॥৭১॥

ताँरे उपेक्षिया कैल शीघ्र गमन ।
के बुझिते पारे महाप्रभुर चित्त-मन ॥७१॥

ताँरे—सार्वभौम भट्टाचार्य की; **उपेक्षिया**—उपेक्षा करके; **कैल**—किया; **शीघ्र**—शीघ्र; **गमन**—गमन; **के**—कौन; **बुझिते**—समझ; **पारे**—सकता है; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **चित्त-मन**—मन और इच्छा।

अनुवाद

यद्यपि सार्वभौम भट्टाचार्य मूर्छित हो गये, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस पर ध्यान नहीं दिया, प्रत्युत वे तुरन्त वहाँ से चले गये। भला श्री चैतन्य महाप्रभु के मन तथा मनोभाव को कौन समझ सकता है?

तात्पर्य

स्वाभाविक तौर पर यह आशा की जाती थी कि जब सार्वभौम भट्टाचार्य मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़े, तब श्री चैतन्य महाप्रभु को उनकी देखभाल करनी चाहिए थी और उनकी चेतना आने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए थी; किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। बल्कि श्री चैतन्य महाप्रभु तुरन्त अपनी यात्रा पर निकल पड़े। अतएव दिव्य पुरुष के कार्यों को समझ पाना अत्यन्त कठिन है।

कभी-कभी ऐसे पुरुष भले ही असामान्य लगें, किन्तु दिव्य व्यक्ति भौतिक धारणाओं से अछूते रहकर अपने पद पर बने रहते हैं।

মহানুভাবের চিত্তের স্বভাব এই হয় ।
পুষ্প-সম কোমল, কঠিন বজ্র-ময় ॥৭২॥

महानुभावेर चित्तेर स्वभाव एइ हय ।
पुष्प-सम कोमल, कठिन वज्र-मय ॥७२॥

महा-अनुभावेर—महान् व्यक्ति का; **चित्तेर**—मन का; **स्वभाव**—स्वभाव; **एइ हय**—यही है; **पुष्प-सम**—फूल के समान; **कोमल**—कोमल; **कठिन**—कठोर; **वज्र-मय**—वज्र के समान।

अनुवाद

एक महान् व्यक्ति के मन का स्वभाव ऐसा ही होता है। कभी वह फूल के समान कोमल हो जाता है, तो कभी वज्र के समान कठोर।

तात्पर्य

महापुरुष के व्यवहार में फूल की कोमलता तथा वज्र की कठोरता का सम्मिलन होता है। *उत्तर रामचरित* का निम्नलिखित उद्धरण (२.७) इस व्यवहार की व्याख्या करता है। मध्यलीला के तृतीय अध्याय के श्लोक २१२ को भी देखा जा सकता है।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमीश्वरः ॥७३॥

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमीश्वरः ॥७३॥

वज्रात् अपि—वज्र से भी; **कठोराणि**—कठोर; **मृदूनि**—कोमल; **कुसुमात् अपि**—पुष्प से भी; **लोक-उत्तराणाम्**—मानव स्वभाव से ऊपर व्यक्ति का; **चेतांसि**—हृदय; **कः**—कौन; **नु**—किन्तु; **विज्ञातुम्**—समझने में; **ईश्वरः**—सक्षम।

अनुवाद

"सामान्य व्यक्ति से ऊँचे व्यवहार वालों के हृदय कभी वज्र से भी

अधिक कठोर होते हैं, तो कभी फूल से भी अधिक कोमल होते हैं। महापुरुषों में ऐसे विरोधाभासों को समझने में कौन समर्थ हो सकता है?"

নিত্যানন্দ প্রভু ভট্টাচার্যে উঠাইল ।
তাঁর লোক-সঙ্গে তাঁরে ঘরে পাঠাইল ॥৭৪॥

নিত্যানন্দ প্রভু ভট্টাচার্য্যে উঠাইল ।
তাঁর লোক-সঙ্গে তাঁরে ঘরে পাঠাইল ॥৭৪॥

নিত্যানন্দ প্রভু—श्री नित्यानन्द प्रभु ने; **ভট্টাচার্য্যে**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **উঠাইল**—उठाया; **তাঁর**—उनके; **লোক-সঙ্গে**—साथियों सहित; **তাঁরে**—उनके (भट्टाचार्य); **ঘরে**—घर; **পাঠাইল**—भेज दिया।

अनुवाद

श्री नित्यानन्द प्रभु ने सार्वभौम भट्टाचार्य को उठाया और उनके लोगों की सहायता से उन्हें उनके घर भेज दिया।

ভক্ত-গণ শীঘ্র আসি' লৈল প্রভুর সাথ ।
বস্ত্র-প্রসাদ লঞা তবে আইলা গোপীনাথ ॥৭৫॥

ভক্ত-গণ শীঘ্র আসি' লৈল প্রভুর সাথ ।
বস্ত্র-প্রসাদ লঞা তবে আইলা গোপীনাথ ॥৭৫॥

ভক্ত-গণ—भक्त; **শীঘ্র**—शीघ्र; **আসি'**—आकर; **লৈল**—लिया; **প্রভুর**—महाप्रभु का; **সাথ**—संग; **বস্ত্র**—वस्त्र; **প্রসাদ**—भगवान् जगन्नाथ के प्रसाद; **লঞা**—के साथ; **তবে**—तब; **আইলা**—आये; **গোপীনাথ**—गोपीनाथ आचार्य।

अनुवाद

तुरन्त सारे भक्त आ गये और श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ हो लिए। इसके बाद गोपीनाथ आचार्य वस्त्र तथा प्रसाद लेकर आये।

সবা-সঙ্গে প্রভু তবে আলালনাথ আইলা ।
নমস্কার করি' তারে বহু-স্তুতি কৈলা ॥৭৬॥

সবা-সঙ্গে প্রভু তবে আলালনাথ আইলা ।
নমস্কার করি' তারে বহু-স্তুতি কৈলা ॥৭৬॥

सबा-सङ्गे—उन सबके साथ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तबे**—तब; **आलालनाथ**—आलालनाथ नामक स्थान; **आइला**—पहुँचे; **नमस्कार करि'**—नमस्कार करके; **तारे**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बहु-स्तुति**—बहुत स्तुति; **कैला**—की।

अनुवाद

सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ-साथ आलालनाथ तक गये। वहाँ उन सबने नमस्कार किया और विविध स्तुतियाँ कीं।

प्रेमावेशे नृत्य-गीत कैल कत-क्षण ।
देखिते आइला ताहाँ वैसे यत जन ॥७७॥

प्रेमावेशे नृत्य-गीत कैल कत-क्षण ।
देखिते आइला ताहाँ वैसे यत जन ॥७७॥

प्रेम-आवेशे—भगवत्-प्रेमावेश में; **नृत्य-गीत**—नृत्य और कीर्तन; **कैल**—किया; **कत-क्षण**—कुछ समय के लिए; **देखिते**—देखने के लिए; **आइला**—आये; **ताहाँ**—वहाँ; **वैसे**—जो रहते थे; **यत जन**—सभी लोग।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कुछ समय तक अत्यधिक भावावेश में नृत्य और कीर्तन किया। पड़ोस के सारे लोग उन्हें देखने आये।

चौदिकेते सब लोक बले 'हरि' 'हरि' ।
प्रेमावेशे मध्ये नृत्य करे गौरहरि ॥७८॥

चौदिकेते सब लोक बले 'हरि' 'हरि' ।
प्रेमावेशे मध्ये नृत्य करे गौरहरि ॥७८॥

चौदिकेते—चारों ओर; **सब लोक**—सभी लोग; **बले**—जोर जोर से बोलने लगे; **हरि हरि**—'हरि हरि'-भगवान् का पावन नाम; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **मध्ये**—मध्य में; **नृत्य करे**—नृत्य करते हैं; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

गौरहरि के नाम से विख्यात श्री चैतन्य महाप्रभु के चारों ओर लोग जोर-जोर से हरि नाम का उच्चारण करने लगे। श्री चैतन्य महाप्रभु हमेशा की तरह अपने प्रेमावेश में मग्न होकर उन सबके बीच नाचते रहे।

কাঞ্চন-সদৃশ দেহ, অরুণ বসন ।
পুলকাশ্রু-কম্প-স্বেদ তাহাতে ভূষণ ॥৭৯॥

কাঞ্চন-সদৃশ দেহ, অরুণ বসন ।
পুলকাশ্রু-কম্প-স্বেদ তাহাতে ভূষণ ॥ ৭৯ ॥

কাঞ্চন-সদৃশ—পিঘলে সোने की तरह; **দেহ**—शरीर; **অরুণ**—केसरी; **বসন**—वस्त्र; **পুলক-অশ্রু**—पुलकित शरीर तथा रोते हुए; **কম্প**—कांपते हुए; **স্বেদ**—पसीना; **তাহাতে**—उन पर; **ভূষণ**—आभूषण।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु का शरीर प्राकृतिक रूप से अत्यन्त सुन्दर था। यह पिघले सोने के समान था और केसरिया वस्त्र से सज्जित था। वे भाव-लक्षणों यथा रोमांच, अश्रु, कम्पन तथा शरीर-भर में पसीने से अलंकृत होकर अत्यन्त सुन्दर लग रहे थे।

দেখিয়া লোকের মনে হৈল চমৎকার ।
যত লোক আইসে, কেহ নাহি যায় ঘর ॥৮০॥

দেখিয়া লোকের মনে হৈল চমৎকার ।
যত লোক আইসে, কেহ নাহি যায় ঘর ॥ ৮০ ॥

দেখিয়া—यह सब देखकर; **লোকের**—लोगों के; **মনে**—मन में; **হৈল**—था; **চমৎকার**—आश्चर्य; **যত**—सब; **লোক**—लोग; **আইসে**—वहाँ आ गये; **কেহ**—कोई भी; **নাহি**—नहीं; **যায়**—जाता; **ঘর**—घर।

अनुवाद

वहाँ पर उपस्थित सारे लोग श्री चैतन्य महाप्रभु के नृत्य तथा उनके शारीरिक परिवर्तनों को देखकर चकित थे। जो भी वहाँ आया वह घर जाने का नाम नहीं ले रहा था।

কেহ নাচে, কেহ গায়, 'শ্রী-কৃষ্ণ' 'গোপাল' ।
প্রেমেতে ভাসিল লোক,—স্ত্রী-বৃদ্ধ-আবাল ॥৮১॥

কেহ নাচে, কেহ গায়, 'শ্রী-কৃষ্ণ' 'গোপাল' ।
প্রেমেতে ভাসিল লোক,—স্ত্রী-বৃদ্ধ-আবাল ॥ ৮১ ॥

केह नाचे—कोई नाचता है; **केह गाय**—कोई गाता है; **श्री-कृष्ण**—भगवान् कृष्ण के नाम का; **गोपाल**—गोपाल; **प्रेमेते**—भगवत्प्रेम में; **भासिल**—तैरने लगे; **लोक**—सभी लोग; **स्त्री**—महिलाएँ; **वृद्ध**—वृद्ध पुरुष; **आ-बाल**—बच्चों से लेकर।

अनुवाद

बच्चे, बूढ़े तथा स्त्रियाँ—हर कोई श्रीकृष्ण तथा गोपाल नाम ले-लेकर नाचने-गाने लगा। इस तरह वे सब भगवत्प्रेम के सागर में तैर रहे थे।

देखि' नित्यानन्द प्रभु कहे भक्त-गणे ।
एइ-रूपे नृत्य आगे हबे ग्रामे-ग्रामे ॥ ८२ ॥

देखि' नित्यानन्द प्रभु कहे भक्त-गणे ।
एइ-रूपे नृत्य आगे हबे ग्रामे-ग्रामे ॥ ८२ ॥

देखि'—यह देखकर; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **प्रभु**—प्रभु; **कहे**—कहते हैं; **भक्त-गणे**—भक्तों को; **एइ-रूपे**—इस प्रकार; **नृत्य**—नृत्य; **आगे**—भविष्य में; **हबे**—होगा; **ग्रामे-ग्रामे**—प्रत्येक गाँव में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के कीर्तन तथा नृत्य को देखकर श्री नित्यानन्द प्रभु ने भविष्यवाणी की कि आगे चलकर गाँव-गाँव में ऐसा नृत्य तथा कीर्तन होगा।

तात्पर्य

श्री नित्यानन्द प्रभु की यह भविष्यवाणी न केवल भारत पर अपितु सारे विश्व पर लागू होती है। उनकी कृपा से अब ऐसा ही हो रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के सदस्य अब पाश्चात्य देशों में गाँव-गाँव में यात्रा कर रहे हैं और अपने साथ अर्चाविग्रह भी लिए रहते हैं। ये भक्त सारे विश्व में विविध पुस्तकें वितरित करते हैं। हमें आशा है कि श्री चैतन्य महाप्रभु के सन्देश का प्रचार करने वाले ये भक्त गम्भीरतापूर्वक एवं दृढ़ता के साथ उनका अनुसरण करेंगे। यदि वे नियमों का पालन करें और नित्य सोलह माला का जप करें, तो श्री चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय का प्रचार करने का उनका प्रयत्न अवश्य ही सफल होगा।

অতিকাল হৈল, লোক ছাড়িয়া না যায় ।
তবে নিত্যানন্দ-গোসাঞি সৃজিলা উপায় ॥ ৮৩ ॥

অতিকাল হৈল, লোক ছাড়িয়া না য়ায় ।
তবে নিত্যানন্দ-গোসাঞি সৃজিলা উপায় ॥ ৮৩ ॥

अतिकाल—बहुत देर; **हैल**—हो गई; **लोक**—लोग; **छाड़िया**—छोड़कर; **ना य्राय**—नहीं जाते हैं; **तबे**—उस समय; **नित्यानन्द**—श्रील नित्यानन्द प्रभु; **गोसाञि**—गोसांई; **सृजिला**—निकाला; **उपाय**—साधन।

अनुवाद

यह देखकर कि काफी विलम्ब हो रहा है, नित्यानन्द गोसांइ ने भीड़ छटाने का उपाय ढूँढ निकाला।

মধ্যাহ্ন করিতে গেলা প্রভুকে লঞা ।
তাহা দেখি' লোক আইসে চৌদিকে ধাঞা ॥ ৮৪ ॥

মধ্যাহ্ন করিতে গেলা প্রভুকে লঞা ।
তাহা দেখি' লোক আইসে চৌদিকে ধাঞা ॥ ৮৪ ॥

मध्याह्न करिते—दोपहर का भोजन करने के लिए; **गेला**—गये; **प्रभुके**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा**—लेकर; **ताहा देखि'**—उन्हें देखकर; **लोक**—सभी लोग; **आइसे**—आये; **चौदिके**—चारों ओर; **धाञा**—दौड़कर।

अनुवाद

जब नित्यानन्द प्रभु श्री चैतन्य महाप्रभु को दोपहर का भोजन कराने ले गये, तो सारे लोग उनके चारों ओर दौड़ते हुए आये।

মধ্যাহ্ন করিয়া আইলা দেবতা-মন্দিরে ।
নিজ-গণ প্রবেশি' কপাট দিল বহির্দ্বারে ॥ ৮৫ ॥

মধ্যাহ্ন করিয়া আইলা দেবতা-মন্দিরে ।
নিজ-গণ প্রবেশি' কপাট দিল বহির্দ্বারে ॥ ৮৫ ॥

मध्याह्न करिया—स्नान आदि करके; **आइला**—लौटकर आये; **देवता-मन्दिरे**—भगवान् के मन्दिर को; **निज-गण प्रवेशि'**—अपने लोगों को अन्दर प्रविष्ट करके; **कपाट दिल**—बन्द किये; **बहिर्-द्वारे**—बाहर का द्वार।

अनुवाद

स्नान करने के बाद वे दोपहर के समय मन्दिर लौट आये। श्री नित्यानन्द प्रभु ने अपने लोगों को भीतर लेकर बाहरी दरवाजे को बन्द कर लिया।

तबे गोपीनाथ दुई-प्रभुरे भिक्षा कराइल ।
प्रभुर शेष प्रसादान्न सबे बाँटि' खाइल ॥८६॥

तबे गोपीनाथ दुइ-प्रभुरे भिक्षा कराइल ।
प्रभुर शेष प्रसादान्न सबे बाँटि' खाइल ॥ ८६ ॥

तबे—तब; **गोपीनाथ**—गोपीनाथ आचार्य; **दुइ-प्रभुरे**—चैतन्य महाप्रभु एवं नित्यानन्द प्रभु दोनों को; **भिक्षा कराइल**—प्रसाद खिलाया; **प्रभुर**—महाप्रभु का; **शेष**—शेष; **प्रसाद-अन्न**—अन्न-प्रसाद; **सबे**—उन सबने; **बाँटि'**—बाँटकर; **खाइल**—खाया।

अनुवाद

तत्पश्चात् गोपीनाथ आचार्य दोनों प्रभुओं के खाने के लिए प्रसाद ले आये, और जब वे खा चुके, तो प्रभुओं के शेष बचे प्रसाद को सभी भक्तों में बाँट दिया गया।

शुनि' शुनि' लोक-सब आसि' बहिर्द्वारे ।
'हरि' 'हरि' बलि' लोक कोलाहल करे ॥८७॥

शुनि' शुनि' लोक-सब आसि' बहिर्द्वारे ।
'हरि' 'हरि' बलि' लोक कोलाहल करे ॥ ८७ ॥

शुनि' शुनि'—यह सुनकर; **लोक-सब**—सभी लोग; **आसि'**—वहाँ आये; **बहिर्-द्वारे**—बाहर के द्वार पर; **हरि हरि**—भगवान् का पावन नाम "हरि हरि"; **बलि'**—उच्चारण करके; **लोक**—सभी लोग; **कोलाहल**—कोलाहल; **करे**—करने लगे।

अनुवाद

यह सुनकर सारे लोग बाहरी दरवाजे पर आ गये और 'हरि' 'हरि' कहकर कीर्तन करने लगे। इस तरह वहाँ पर कोलाहल मच गया।

তবে মহাপ্রভু দ্বার করাইল মোচন ।
আনন্দে আসিয়া লোক পাইল দরশন ॥৮৮॥

तबे महाप्रभु द्वार कराइल मोचन ।
आनन्दे आसिया लोक पाइल दरशन ॥८८॥

तबे—इसके बाद; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **द्वार**—द्वार; **कराइल**—किया; **मोचन**—खोलना; **आनन्दे**—आनन्द में; **आसिया**—आकर; **लोक**—सभी लोगों ने; **पाइल**—पाया; **दरशन**—दर्शन।

अनुवाद

दोपहर के भोजन के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने दरवाजा खुलवा दिया। इस तरह हर एक ने बड़े ही आनन्द से उनका दर्शन प्राप्त किया।

এই-মত সন্ধ্যা পর্যন্ত লোক আসে, যায় ।
'বৈষ্ণব' হইল লোক, সবে নাচে, গায় ॥৮৯॥

एइ-मत सन्ध्या पर्यन्त लोक आसे, य़ाय ।
'वैष्णव' हइल लोक, सबे नाचे, गाय ॥८९॥

एइ-मत—इस प्रकार; **सन्ध्या पर्यन्त**—संध्या तक; **लोक**—लोग; **आसे य़ाय**—आये और गये; **वैष्णव**—भक्त, वैष्णव; **हइल**—बन गये; **लोक**—सभी लोग; **सबे**—वे सब; **नाचे**—नाचने लगे; **गाय**—और कीर्तन करने लगे।

अनुवाद

लोग संध्या-समय तक आते और जाते रहे। वे सभी वैष्णव-भक्त बन गये और कीर्तन करने और नाचने लगे।

এই-রূপে সেই ঠাঞি ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
সেই রাত্রি গোঙাইলা কৃষ্ণ-কথা-রঙ্গে ॥৯০॥

एइ-रूपे सेइ ठाञि भक्त-गण-सङ्गे ।
सेइ रात्रि गोङाइला कृष्ण-कथा-रङ्गे ॥९०॥

एइ-रूपे—इस प्रकार; **सेइ ठाञि**—उसी जगह पर; **भक्त-गण-सङ्गे**—भक्तों के साथ; **सेइ रात्रि**—वह रात; **गोङाइला**—गुजारी; **कृष्ण-कथा-रङ्गे**—आनन्दपूर्वक भगवान् कृष्ण की चर्चा करने में।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने रात वहीं बिताई, और अपने भक्तों के साथ बड़े ही आनन्द से भगवान् कृष्ण की लीलाओं की चर्चा की।

प्रातः-काले स्नान करि' करिला गमन ।
भक्त-गणे विदाय दिला करि' आलिङ्गन ॥९१॥

प्रातः-काले स्नान करि' करिला गमन ।
भक्त-गणे विदाय दिला करि' आलिङ्गन ॥ ९१ ॥

प्रातः-काले—प्रातः काल; **स्नान**—स्नान; **करि'**—करके; **करिला**—प्रारम्भ की; **गमन**—यात्रा; **भक्त-गणे**—सभी भक्तों को; **विदाय**—विदाई; **दिला**—दी; **करि'**—करके; **आलिङ्गन**—आलिंगन।

अनुवाद

प्रातःकाल स्नान करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी दक्षिण-भारत यात्रा पर चल पड़े। उन्होंने भक्तों का आलिंगन करके उनसे विदा ली।

मूर्च्छित हञा सबे भूमिते पड़िला ।
ताँहा-सबा पाने प्रभु फिरि' ना चाहिला ॥९२॥

मूर्च्छित हञा सबे भूमिते पड़िला ।
ताँहा-सबा पाने प्रभु फिरि' ना चाहिला ॥ ९२ ॥

मूर्च्छित हञा—मूर्च्छित होकर; **सबे**—सभी; **भूमिते**—भूमि पर; **पड़िला**—गिर पड़े; **ताँहा-सबा**—उन सब; **पाने**—की ओर; **प्रभु**—चैतन्य महाप्रभु ने; **फिरि'**—मुड़कर; **ना**—नहीं; **चाहिला**—देखा।

अनुवाद

यद्यपि वे सब बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़े थे, किन्तु महाप्रभु ने मुड़कर उनकी ओर नहीं देखा—वे आगे ही बढ़ते गये।

विच्छेदे व्याकुल प्रभु चलिला दुःखी हञा ।
पाछे कृष्णदास याय जल-पात्र लञा ॥९३॥

विच्छेदे व्याकुल प्रभु चलिला दुःखी हञा ।
पाछे कृष्णदास ग्राय जल-पात्र लञा ॥ ९३ ॥

विच्छेदे—विरह में; **व्याकुल**—व्याकुल; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **चलिला**—चले गये; **दुःखी**—दुःखी; **हञा**—होकर; **पाछे**—पीछे; **कृष्णदास**—उनका सेवक कृष्णदास; **ग्राय**—गया; **जल-पात्र**—जलपात्र; **लञा**—लेकर।

अनुवाद

वियोग के कारण महाप्रभु अत्यन्त व्याकुल हो उठे और दुःखी मन से चलते रहे। उनका सेवक कृष्णदास उनका जलपात्र लिए उनके पीछे पीछे चल रहा था।

ভক্ত-গণ উপবাসী তাহাঙি রহিলা ।
আর দিনে দুঃখী হঞা নীলাচলে আইলা ॥ ৯৪ ॥

भक्त-गण उपवासी ताहाञि रहिला ।
आर दिने दुःखी हञा नीलाचले आइला ॥ ९४ ॥

भक्त-गण—भक्त गण; **उपवासी**—उपवास करके; **ताहाञि**—वहाँ; **रहिला**—रहे; **आर दिने**—अगले दिन; **दुःखी**—दुःखी; **हञा**—होकर; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी; **आइला**—लौट गये।

अनुवाद

सारे भक्त वहीं बिना खाये पड़े रहे, किन्तु अगले दिन सभी दुःखी मन से जगन्नाथ पुरी लौट गये।

মত্ত-সিংহ-প্রায় প্রভু করিলা গমন ।
প্রেমাবেশে যায় করি' নাম-সঙ্কীর্তন ॥ ৯৫ ॥

मत्त-सिंह-प्राय प्रभु करिला गमन ।
प्रेमावेशे ग्राय करि' नाम-सङ्कीर्तन ॥ ९५ ॥

मत्त-सिंह—एक उन्मत्त शेर; **प्राय**—की भाँति; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **करिला**—किया; **गमन**—प्रस्थान; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **ग्राय**—गये; **करि'**—करते हुए ; **नाम-सङ्कीर्तन**—हरिनाम संकीर्तन।

अनुवाद

प्रायः उन्मत्त सिंह की भाँति श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी यात्रा पर निकल पड़े। वे प्रेमावेश से पूर्ण थे और कृष्ण-नाम का निम्नवत् उच्चारण करते हुए संकीर्तन करते जा रहे थे।

कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! हे ।
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! हे ॥
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! रक्ष माम् ।
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! पाहि माम् ॥
राम! राघव! राम! राघव! राम! राघव! रक्ष माम् ।
कृष्ण! केशव! कृष्ण! केशव! कृष्ण! केशव! पाहि माम् ॥

कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! हे ।
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! हे ॥
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! रक्ष माम् ।
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! पाहि माम् ॥
राम! राघव! राम! राघव! राम! राघव! रक्ष माम् ।
कृष्ण! केशव! कृष्ण! केशव! कृष्ण! केशव! पाहि माम् ॥ ९६ ॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण; **हे**—हे; **रक्ष**—कृपया रक्षा करो; **माम्**—मेरी; **पाहि**—कृपया रक्षा करो; **राम**—भगवान् राम; **राघव**—राजा रघु के वंशज; **केशव**—केशी राक्षस के हन्ता।

अनुवाद

महाप्रभु कीर्तन कर रहे थे—

कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! हे
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! हे
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! रक्ष माम्
कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! कृष्ण! पाहि माम्

अर्थात् "हे भगवान् कृष्ण! कृपया मेरी रक्षा कीजिये और मेरा पालन कीजिये।" उन्होंने यह भी कीर्तन किया—

राम! राघव! राम! राघव! राम! राघव! रक्ष माम्।
कृष्ण! केशव! कृष्ण! केशव! कृष्ण! केशव! पाहि माम्।

अर्थात् हे राजा रघु के वंशज! हे भगवान् राम! मेरी रक्षा करें। हे कृष्ण, हे केशी असुर के संहारक केशव, कृपया मेरा पालन करें।

এই শ্লোক পড়ি' পথে চলিলা গৌরহরি ।
লোক দেখি' পথে কহে,—বল 'হরি' 'হরি' ॥৯৭॥

এই শ্লোক পড়ি' পথে চলিলা গৌরহরি ।
লোক দেখি' পথে কহে,—বল 'হরি' 'হরি' ॥ ৯৭॥

এই শ্লোক পড়ি'—यह (कृष्ण! कृष्ण!) श्लोक पढ़कर; **पथे**—रास्ते में; **चलिला**—गये; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लोक देखि'**—दूसरे लोगों को देखकर; **पथे**—मार्ग में; **कहे**—वे कहते हैं; **बल**—कहो; **हरि हरि**—भगवान् हरि का नाम हरि हरि बोलो।

अनुवाद

इस श्लोक का कीर्तन करते हुए गौरहरि श्री चैतन्य महाप्रभु अपने मार्ग पर चले जा रहे थे। जब वे किसी को देखते, तो वे उससे अनुरोध करते कि "हरि! हरि!" बोलो।

সেই লোক প্রেম-মত্ত হঞা বলে 'হরি' 'কৃষ্ণ' ।
প্রভুর পাছে সঙ্গে যায় দর্শন-সতৃষ্ণ ॥৯৮॥

সেই লোক প্রেম-মত্ত হঞা বলে 'হরি' 'কৃষ্ণ' ।
প্রভুর পাছে সঙ্গে যায় দর্শন-সতৃষ্ণ ॥ ৯৮॥

সেই লোক—वह व्यक्ति; **প্রেম-মত্ত**—भगवत् प्रेम में पागल; **হঞা**—होकर; **বলে**—कहता है; **হরি কৃষ্ণ**—भगवान् हरि तथा भगवान् कृष्ण का पवित्र नाम; **প্রভুর পাছে**—महाप्रभु के पीछे; **সঙ্গে**—उनके साथ; **যায়**—जाता है; **দর্শন-সতৃষ্ণ**—उनके दर्शन करने के लिए अत्यन्त उत्सुक होकर।

अनुवाद

जो कोई भी श्री चैतन्य महाप्रभु को "हरि! हरि!" बोलते सुनता, वह भी हरि तथा कृष्ण के नामों का उच्चारण करने लगता। इस तरह वे सब महाप्रभु का दर्शन पाने की उत्सुकता से उनके पीछे-पीछे चलने लगते।

কত-ক্ষণে রহি' প্রভু তারে আলিঙ্গিয়া ।
বিদায় করিল তারে শক্তি সঞ্চারিয়া ॥৯৯॥

कत-क्षणे रहि' प्रभु तारे आलिङ्गिया ।
विदाय करिल तारे शक्ति सञ्चारिया ॥ ९९ ॥

कत-क्षणे रहि'—कुछ क्षण ठहरकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **तारे**—उनमें से प्रत्येक को; **आलिङ्गिया**—आलिंगन करके; **विदाय करिल**—विदा किया; **तारे**—उनमें से प्रत्येक में; **शक्ति**—आध्यात्मिक शक्ति; **सञ्चारिया**—संचारित करके।

अनुवाद

कुछ समय बाद महाप्रभु उन लोगों का आलिंगन करते और उन्हें आध्यात्मिक शक्ति से ओतप्रोत करने के बाद घर वापस जाने के लिए कहते।

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में बतलाया है कि यह आध्यात्मिक शक्ति ह्लादिनी शक्ति तथा संवित् शक्ति का सार है। इन दोनों शक्तियों से मनुष्य भक्ति से समन्वित होता है। स्वयं भगवान् कृष्ण या उनका प्रतिनिधि कोई शुद्ध भक्त इन सम्मिलित शक्तियों को किसी भी व्यक्ति को कृपा करके दे सकते हैं। इन शक्तियों से युक्त होकर कोई भी व्यक्ति भगवान् का शुद्ध भक्त बन सकता है। श्री चैतन्य महाप्रभु ने जिस पर भी कृपा की, उसे यह *भक्ति-शक्ति* प्रदान की। इस तरह महाप्रभु के सारे अनुयायी भगवान् की कृपावश कृष्णभावनामृत का प्रचार करने में समर्थ हो सके।

সেই-জন নিজ-গ্রামে করিয়া গমন ।
'কৃষ্ণ' বলি' হাসে, কান্দে, নাচে অনুক্ষণ ॥১০০॥

सेइ-जन निज-ग्रामे करिया गमन ।
'कृष्ण' बलि' हासे, कान्दे, नाचे अनुक्षण ॥ १०० ॥

सेइ-जन—वह व्यक्ति; **निज-ग्रामे**—अपने गाँव को; **करिया गमन**—लौटकर; **कृष्ण बलि'**—कृष्ण का पावन नाम कहकर; **हासे**—हँसता है; **कान्दे**—रोता है; **नाचे**—नाचता है; **अनुक्षण**—सदा।

अनुवाद

इस प्रकार शक्ति को पाकर हर व्यक्ति कृष्ण-नाम का कीर्तन करता और कभी हँसता, रोता और नाचता हुआ अपने घर को लौटता।

যারে দেখে, তারে কহে,—কহ কৃষ্ণ-নাম ।
এই-মত 'বৈষ্ণব' কৈল সব নিজ-গ্রাম ॥ ১০১ ॥

য়ারে देखे, तारे कहे,—कह कृष्ण-नाम ।
एइ-मत 'वैष्णव' कैल सब निज-ग्राम ॥ १०१ ॥

য়ারে देखे—जिसे भी वह मिलता; **तारे**—उसको; **कहे**—वह कहता; **कह कृष्ण-नाम**—कृपया हरे कृष्ण मंत्र का उच्चारण करो; **एइ-मत**—इस प्रकार; **वैष्णव**—भगवान् के भक्त; **कैल**—हो गये; **सब**—सब; **निज-ग्राम**—अपने गाँव।

अनुवाद

इस प्रकार शक्ति प्राप्त व्यक्ति जिस किसी को देखता, उसी से प्रार्थना करता कि वह कृष्ण-नाम का उच्चारण करें। इस तरह सारे गाँव वाले भी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के भक्त बन जाते।

तात्पर्य

ऐसे शक्ति-प्राप्त प्रचारक बनने के लिए मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि उसे चैतन्य महाप्रभु या उनके भक्त श्री गुरुदेव की कृपा प्राप्त हो। भक्त को प्रत्येक व्यक्ति को महामन्त्र का कीर्तन करने का अनुरोध करना चाहिए। इस तरह ऐसा व्यक्ति दूसरों को पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का शुद्ध भक्त बनने का मार्ग दिखलाकर उन्हें वैष्णव बना सकता है।

গ্রামান্তর হৈতে দেখিতে আইল যত জন ।
তাঁর দর্শন-কৃপায় হয় তাঁর সম ॥ ১০২ ॥

ग्रामान्तर हैते देखिते आइल य्रत जन ।
ताँर दर्शन-कृपाय हय ताँर सम ॥ १०२ ॥

ग्राम-अन्तर हैते—विभिन्न गाँवों से; **देखिते**—देखने के लिए; **आइल**—आये; **य्रत जन**—सभी लोग; **ताँर**—उनके; **दर्शन-कृपाय**—दर्शन की कृपा से; **हय**—हो गये; **ताँर सम**—उसी प्रकार के भक्त।

अनुवाद

ऐसे शक्ति प्राप्त लोगों का दर्शन करने मात्र से विभिन्न गाँवों के लोग जो उन्हें देखने आते, उनकी कृपादृष्टि से उन्हीं के समान बन जाते।

সেই যাই' গ্রামের লোক বৈষ্ণব করয় ।
অন্য-গ্রামী আসি' তাঁরে দেখি' বৈষ্ণব হয় ॥১০৩॥

सेइ ग्राइ' ग्रामेर लोक वैष्णव करय ।
अन्य-ग्रामी आसि' ताँरे देखि' वैष्णव हय ॥ १०३॥

सेइ—वह भक्त; **ग्राइ'**—अपने गाँव में जाकर; **ग्रामेर लोक**—गाँव के सभी लोगों को; **वैष्णव**—भक्त; **करय**—बनाता; **अन्य-ग्रामी**—विभिन्न गाँवों के निवासी; **आसि'**—वहाँ आकर; **ताँरे देखि'**—उसे देखकर; **वैष्णव हय**—भक्त हो जाते।

अनुवाद

जब शक्ति से संचारित ये लोग अपने अपने गाँवों को लौटते, तो इन्होंने भी दूसरों को भक्त बना लिया। जब और लोग विभिन्न गाँवों से इन्हें देखने आये, तो वे भी भक्त बन गये।

সেই যাই' আর গ্রামে করে উপদেশ ।
এই-মত 'বৈষ্ণব' হৈল সব দক্ষিণ-দেশ ॥১০৪॥

सेइ ग्राइ' आर ग्रामे करे उपदेश ।
एइ-मत 'वैष्णव' हैल सब दक्षिण-देश ॥ १०४॥

सेइ—वह व्यक्ति; **ग्राइ'**—जाकर; **आर**—अन्य; **ग्रामे**—गाँव को; **करे**—देता है; **उपदेश**—उपदेश; **एइ-मत**—इस प्रकार; **वैष्णव**—भक्त; **हैल**—हो गये; **सब**—सब; **दक्षिण-देश**—दक्षिण भारत के लोग।

अनुवाद

इस प्रकार जैसे जैसे वे सारे शक्ति-प्राप्त लोग एक गाँव से दूसरे गाँव जाने लगे, वैसे वैसे दक्षिण भारत के सारे लोग भक्त बनते गये।

এই-মত পথে যাইতে শত শত জন ।
'বৈষ্ণব' করেন তাঁরে করি' আলিঙ্গন ॥১০৫॥

এই-মত পথে যাইতে শত শত জন ।
'বৈষ্ণব' করেন তাঁরে করি' আলিঙ্গন ॥ ১০৫ ॥

এই-মত—इस प्रकार; **পথে**—मार्ग में; **যাইতে**—जाते समय; **শত শত**—सैंकड़ों; **জন**—लोग; **বৈষ্ণব**—भक्त; **করেন**—बनाते हैं; **তাঁরে**—उनको; **করি'**—करके; **আলিঙ্গন**—आलिंगन।

अनुवाद

इस तरह कई सौ लोग वैष्णव बन गये, जो महाप्रभु को रास्ते में मिले और जिन्हें उन्होंने गले लगाया।

যেই গ্রামে রহি' ভিক্ষা করেন যাঁর ঘরে ।
সেই গ্রামের যত লোক আইসে দেখিবারে ॥ ১০৬ ॥

যেই গ্রামে রহি' ভিক্ষা করেন যাঁর ঘরে ।
সেই গ্রামের যত লোক আইসে দেখিবারে ॥ ১০৬ ॥

যেই গ্রামে—जिस किसी गाँव में; **রহি'**—ठहरते हैं; **ভিক্ষা**—भिक्षा; **করেন**—लेने के लिए; **যাঁর**—जिसके; **ঘরে**—घर पर; **সেই**—उसी; **গ্রামের**—गाँव के; **যত লোক**—सभी लोग; **আইসে**—आते हैं; **দেখিবারে**—दर्शन के लिए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु जिस-जिस गाँव में भिक्षा ग्रहण करने के लिए रुके, वहीं अनेक लोग उनका दर्शन करने आये।

প্রভুর কৃপায় হয় মহাভাগবত ।
সেই সব আচার্য হঞা তারিল জগৎ ॥ ১০৭ ॥

প্রভুর কৃপায় হয় মহাভাগবত ।
সেই সব আচার্য্য হঞা তারিল জগৎ ॥ ১০৭ ॥

প্রভুর কৃপায়—महाप्रभु की कृपा से; **হয়**—हो गये; **মহা-ভাগবত**—प्रथम श्रेणी के भक्त; **সেই সব**—ऐसे सभी लोग; **আচার্য্য**—गुरु; **হঞা**—होकर; **তারিল**—उद्धार किया; **জগৎ**—सारे जगत् का।

अनुवाद

भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से सारे व्यक्ति उच्च कोटि के भक्त बन गये। बाद में वे शिक्षक या गुरु बने और उन्होंने सम्पूर्ण जगत् का उद्धार किया।

এই-মত কৈলা যাবজ্জেলা সেতুবন্ধে ।
সর্ব-দেশ 'বৈষ্ণব' হৈল প্রভুর সম্বন্ধে ॥ ১০৮ ॥

এइ-মত কৈলা য়াবত্গেলা সেতুবন্ধে ।
সর্ব-দেশ 'বৈষ্ণব' হৈল প্রভুর সম্বন্ধে ॥ ১০৮ ॥

এइ-মত—इस प्रकार; **कैला**—किया; **য়াবत्**—तक; **गेला**—गये; **सेतुबन्धे**—सेतु बन्धु, भारत का दक्षिणतम भाग; **सर्व-देश**—सभी देश; **वैष्णव**—भक्त; **हैल**—हो गये; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सम्बन्धे**—के सम्बन्ध में।

अनुवाद

इस तरह महाप्रभु भारत की दक्षिण सीमा तक गये और उन्होंने सारे प्रान्तों के लोगों को वैष्णव बना दिया।

নবদ্বীপে যেই শক্তি না কৈলা প্রকাশে ।
সে শক্তি প্রকাশি' নিস্তারিল দক্ষিণ-দেশে ॥ ১০৯ ॥

নবদ্বীপে য়েই শক্তি না কৈলা প্রকাশে ।
সে শক্তি প্রকাশি' নিস্তারিল দক্ষিণ-দেশে ॥ ১০৯ ॥

নবদ্বীপে—নবদ্বীপ में; **য়েই**—जो; **শক্তি**—शक्ति; **না**—नहीं; **কৈলা**—की; **প্রকাশে**—प्रकट; **সে**—वह; **শক্তি**—शक्ति; **প্রকাশি'**—प्रकट करके; **নিস্তারিল**—उद्धार किया; **দক্ষিণ-দেশে**—दक्षिण भारत का।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नवद्वीप में अपनी आध्यात्मिक शक्ति प्रकट नहीं की, किन्तु उन्होंने ने दक्षिण भारत में उसे प्रकट किया और वहाँ के सारे लोगों का उद्धार किया।

तात्पर्य

नवद्वीप धाम श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्मस्थल है। उस समय वहाँ अनेक *स्मार्त* (वैदिक कर्मकाण्डी किन्तु अभक्त) रहते थे। स्मृति-शास्त्र के अनुयायी *स्मार्त* कहलाते हैं। उनमें से अधिकांश अभक्त होते हैं और उनका मुख्य कार्य है ब्राह्मण-सिद्धान्तों का कड़ाई से पालन करना। किन्तु इन्हें भक्ति का ज्ञान नहीं होता। नवद्वीप में सारे विद्वान लोग स्मृति-शास्त्र के अनुयायी (स्मार्त) हैं, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें बदलने का प्रयास नहीं किया। इसीलिए

लेखक ने यह विशेष रूप से उल्लेख किया है कि श्री चैतन्य महाप्रभु ने जो आध्यात्मिक शक्ति नवद्वीप में प्रकट नहीं की थी, वह उनकी कृपा से दक्षिण भारत में प्रकट हुई। इस तरह वहाँ का हर व्यक्ति वैष्णव बन गया। इससे यह समझना चाहिए कि अनुकूल परिस्थिति होने पर लोग प्रचार-कार्य में रुचि लेते हैं। यदि जिन लोगों को बदला जाना है वे उत्पात करते हैं, तो हो सकता है कि प्रचारक उनके बीच कृष्णभावनामृत का प्रचार करने का पसन्द न करे। श्रेयस्कर यही होगा कि जहाँ परिस्थिति उपयुक्त हो, वहाँ जाकर प्रचार-कार्य किया जाए। इस कृष्णभावनामृत आन्दोलन का पहला प्रयास भारत में ही किया गया, किन्तु भारत के लोग राजनीतिक विचारों में मग्न रहने के कारण इसे ग्रहण नहीं कर सके। उन्हें राजनीतिक नेताओं ने लुभा रखा था। इसीलिए हमने अपने गुरु का आदेश मानकर पश्चिम में आना श्रेयस्कर समझा और श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से यह आन्दोलन सफल हो रहा है।

प्रभुके ये भजे, तारे ताँर कृपा हय ।
सेइ से ए-सब लीला सत्य करि' लय ॥ ११०॥

प्रभुके ये भजे, तारे ताँर कृपा हय ।
सेइ से ए-सब लीला सत्य करि' लय ॥ ११०॥

प्रभुके—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ये**—जो कोई; **भजे**—पूजा करता है; **तारे**—उस पर; **ताँर**—चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा; **हय**—होती है; **सेइ से**—ऐसा व्यक्ति; **ए-सब**—ये सब; **लीला**—लीलाएँ; **सत्य**—सत्य; **करि'**—मानकर; **लय**—लेता है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अन्यों को किस तरह शक्ति प्रदान करते हैं, उसे केवल वही समझ सकता है, जो वास्तव में भगवद्भक्त है और जिसे उनकी कृपा प्राप्त हो चुकी है।

अलौकिक-लीलाय यार ना हय विश्वास ।
इह-लोक, पर-लोक तार हय नाश ॥ १११॥

अलौकिक-लीलाय यार ना हय विश्वास ।
इह-लोक, पर-लोक तार हय नाश ॥ १११॥

अलौकिक—आलौकिक; **लीलाय**—लीलाओं में; **ग्रार**—किसी की; **ना**—नहीं; **हय**—है; **विश्वास**—विश्वास; **इह-लोक**—इस संसार में; **पर-लोक**—अगले लोक में; **तार**—उसका; **हय**—होता है; **नाश**—नाश।

अनुवाद

जो व्यक्ति महाप्रभु की असामान्य दिव्य लीलाओं में विश्वास नहीं करता, उसका इस लोक तथा परलोक दोनों में विनाश हो जाता है।

प्रथमेई कहिल प्रभुर ये-रूपे गमन ।
एई-मत जानिह यावज्दक्षिण-भ्रमण ॥ ११२॥

प्रथमेइ कहिल प्रभुर ग्रे-रूपे गमन ।
एइ-मत जानिह ग्रावत्दक्षिण-भ्रमण ॥ ११२॥

प्रथमेइ—आरम्भ में; **कहिल**—मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **ग्रे-रूपे**—जैसा; **गमन**—भ्रमण; **एइ-मत**—इस प्रकार; **जानिह**—आपको जानना चाहिए; **ग्रावत्**—जब तक; **दक्षिण-भ्रमण**—दक्षिण भारत में भ्रमण।

अनुवाद

मैंने पहले महाप्रभु के गमन के विषय में जो कुछ कहा है, उसे महाप्रभु की दक्षिण भारत की पूरी यात्रा की अवधि पर लागू समझना चाहिए।

एई-मत याइते याइते गेला कूम-स्थाने ।
कूर्म देखि' कैल ताँरे स्तवन-प्रणामे ॥ ११३॥

एइ-मत ग्राइते ग्राइते गेला कूर्म-स्थाने ।
कूर्म देखि' कैल ताँरे स्तवन-प्रणामे ॥ ११३॥

एइ-मत—इस प्रकार; **ग्राइते ग्राइते**—चलते चलते; **गेला**—वे गये; **कूर्म-स्थाने**—कुर्म क्षेत्र नामक तीर्थ-स्थान पर; **कूर्म देखि'**—भगवान् कूर्म का दर्शन करके; **कैल**—भेंट की; **ताँरे**—उनको; **स्तवन**—स्तुति; **प्रणामे**—और नमस्कार।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु कूर्मक्षेत्र नामक तीर्थस्थान में पहुँचे, तो उन्होंने अर्चाविग्रह का दर्शन किया, स्तुति की तथा प्रणाम किया।

तात्पर्य

कूर्मस्थान सुप्रसिद्ध तीर्थस्थल है। वहाँ पर कूर्मदेव का मन्दिर है। *प्रपन्नामृत* में कहा गया है कि भगवान् जगन्नाथ ने एक रात श्री रामानुजाचार्य को जगन्नाथ पुरी से उठाकर कूर्मक्षेत्र में फेंक दिया। यह कूर्मक्षेत्र दक्षिणी रेलवे लाइन पर स्थित है। इसके लिए चिका कोल रोड नामक रेलवे स्टेशन जाना होता है। इस स्टेशन से कूर्माचल नामक तीर्थस्थल पर पहुँचने के लिए आठ मील पूर्व की ओर जाना होता है। तेलुगुभाषी इस तीर्थस्थल को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानते हैं। *गंजाम मैनुअल* नामक सरकारी गजट में इसका उल्लेख है। वहाँ पर कूर्मदेव का अर्चाविग्रह है और श्रील रामानुजाचार्य को जगन्नाथ पुरी से इसी स्थान पर स्थानांतरित कर दिये गये थे। उस समय उन्होंने सोचा कि कूर्मदेव का विग्रह शिवजी का अर्चाविग्रह है, इसलिए उन्होंने वहाँ उपवास किया। किन्तु जब उन्हें बाद में पता लगा कि कूर्मविग्रह भगवान् विष्णु का ही अन्य रूप है, तो उन्होंने कूर्मदेव की भव्य पूजा का प्रबन्ध करा दिया। यह कथन *प्रपन्नामृत* (अध्याय ३६) में पाया जाता है। कूर्मक्षेत्र या कूर्मस्थान का यह पवित्र स्थल वास्तव में जगन्नाथ पुरी में भगवान् जगन्नाथजी के प्रभाव से श्रीपाद रामानुजाचार्य द्वारा पुनः स्थापित किया गया था। बाद में यह मन्दिर विजयनगर के राजा के प्रबन्ध में चला गया। अर्चाविग्रह की पूजा मध्वाचार्य सम्प्रदाय के वैष्णवों द्वारा की जाती थी। इस मन्दिर में कुछ शिलालेख हैं, जो श्री नरहरि तीर्थ द्वारा लिखे गये बताये जाते हैं। ये मध्वाचार्य की गुरु-शिष्य परम्परा में हुए हैं। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने इन लेखों का विवरण इस प्रकार दिया है : (१) श्री पुरुषोत्तम यति अनेक विद्वान पुरुषों के शिक्षक के रूप में आविर्भूत हुए। वे भगवान् विष्णु के प्रिय भक्त थे। (२) उनके उपदेशों का सारे जगत् में सम्मान होता था और वे अपने तर्क से अनेक अभक्तों का उद्धार करते थे। (३) उन्होंने आनन्दतीर्थ को दीक्षा दी और अनेक मूर्खों को संन्यास दिलाया तथा उन्हें अपने डण्डे से दण्ड दिया (४) उनकी सारी कृतियाँ तथा उनके वचन अत्यन्त सशक्त हैं। उन्होंने अनेक लोगों को विष्णु-भक्ति प्रदान की, जिससे वे वैकुण्ठ लोक जाने के योग्य बने। (५) उनके भक्ति-विषयक उपदेश किसी भी व्यक्ति को भगवान् के चरणकमलों को प्राप्त कराने के योग्य थे।

(६) उन्होंने नरहरि तीर्थ को भी दीक्षित किया और वे कलिंग प्रान्त के शासक भी बने। (७) नरहरि तीर्थ ने शवरों से युद्ध किया, जो कि चण्डाल या शिकारी थे और इस तरह कूर्म मन्दिर को बचाया। (८) नरहरि तीर्थ अत्यन्त धर्मात्मा तथा शक्तिशाली राजा थे। (९) उनका देहान्त वैशाख सुदी ११, शाक सम्बत १२०३ में हुआ। इसके पूर्व मन्दिर का निर्माण हो चुका था और यह योगानन्द नृसिंहदेव को समर्पित हो चुका था। इस शिलालेख की तिथि २९ मार्च १२८१ शनिवार है।

প্রেমাবেশে হাসি' কান্দি' নৃত্য-গীত কৈল ।
দেখি' সর্ব লোকের চিত্তে চমৎকার হৈল ॥১১৪॥

प्रेमावेशे हासि' कान्दि' नृत्य-गीत कैल ।
देखि' सर्व लोकेर चित्ते चमत्कार हैल ॥ ११४ ॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **हासि'**—हँसते हुए; **कान्दि'**—रोते हुए; **नृत्य-गीत**—नाचते गाते हुए; **कैल**—किया; **देखि'**—देखकर; **सर्व लोकेर**—वहाँ सभी लोग; **चित्ते**—मन में; **चमत्कार**—चमत्कार; **हैल**—हो गया।

अनुवाद

जब तक श्री चैतन्य महाप्रभु इस स्थान पर रहे, वे यथावत् अपने भगवत्प्रेम के भावावेश में रहे और हँसते, रोते, नाचते तथा कीर्तन करते रहे। जो भी उन्हें देखता, आश्चर्यचकित रह जाता।

আশ্চর্য শুনিয়া লোক আইল দেখিবারে ।
প্রভুর রূপ-প্রেম দেখি' হৈলা চমৎকারে ॥১১৫॥

आश्चर्य शुनिया लोक आइल देखिबारे ।
प्रभुर रूप-प्रेम देखि' हैला चमत्कारे ॥ ११५ ॥

आश्चर्य—आश्चर्यजनक घटना; **शुनिया**—सुनकर; **लोक**—लोग; **आइल**—आये; **देखिबारे**—देखने के लिए; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **रूप**—रूप को; **प्रेम**—तथा भगवत् प्रेम को; **देखि'**—देखकर; **हैला**—हो गये; **चमत्कारे**—आश्चर्यचकित।

अनुवाद

इन अद्भुत घटनाओं को सुन-सुनकर लोग वहाँ उनके दर्शन करने

आते। जब वे महाप्रभु का सौन्दर्य तथा उनकी भावदशा देखते, तो वे आश्चर्यचकित रह जाते।

দর্শনে 'বৈষ্ণব' হৈল, বলে 'কৃষ্ণ' 'হরি' ।
প্রেমাবেশে নাচে লোক ঊর্ধ্ব বাহু করি' ॥ ১১৬॥

দর্শনে 'বৈষ্ণব' হৈল, বলে 'কৃষ্ণ' 'হরি' ।
প্রেমাবেশে নাচে লোক ঊর্ধ্ব বাহু করি' ॥ ১১৬॥

दर्शने—दर्शन करके; **वैष्णव हैल**—वे भक्त बन गये; **बले**—बोलने लगे; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **हरि**—भगवान् हरि; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **नाचे**—नाचते हैं; **लोक**—सभी लोग; **ऊर्ध्व बाहु करि'**—बाजू ऊपर करके।

अनुवाद

चैतन्य महाप्रभु के दर्शन-मात्र से लोग भक्त बन गये। वे "कृष्ण" तथा "हरि" एवं समस्त पवित्र नामों का कीर्तन करने लगे। वे सभी प्रेमावेश में मग्न होकर अपने हाथ ऊपर उठा-उठाकर नाचने लगे।

কৃষ্ণ-নাম লোক-মুখে শুনি' অবিরাম ।
সেই লোক 'বৈষ্ণব' কৈল অন্য সব গ্রাম ॥ ১১৭॥

কৃষ্ণ-নাম লোক-মুখে শুনি' অবিরাম ।
সেই লোক 'বৈষ্ণব' কৈল অন্য সব গ্রাম ॥ ১১৭॥

कृष्ण-नाम—भगवान् कृष्ण का पावन नाम; **लोक-मुखे**—उन लोगों के मुख से; **शुनि'**—सुनकर; **अविराम**—सदा; **सेइ लोक**—वही लोग; **वैष्णव**—भक्त; **कैल**—बनाये; **अन्य**—अन्य; **सब**—सब; **ग्राम**—गाँव।

अनुवाद

उन्हें सदैव भगवान् कृष्ण के पवित्र नामों का कीर्तन करते सुनकर दूसरे सभी गाँवों के लोग भी वैष्णव बन गये।

এই-মত পরম্পরায় দেশ 'বৈষ্ণব' হৈল ।
কৃষ্ণ-নামামৃত-বন্যায় দেশ ভাসাইল ॥ ১১৮॥

एइ-मत परम्पराय देश 'वैष्णव' हैल ।
कृष्ण-नामामृत-वन्याय देश भासाइल ॥ ११८ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **परम्पराय**—गुरु-शिष्य परम्परा से; **देश**—देश; **वैष्णव हैल**—भक्त बन गया; **कृष्ण-नाम-अमृत**—कृष्ण के पावन नाम का अमृत; **वन्याय**—बाढ़ में; **देश**—सारा देश; **भासाइल**—डूब गया।

अनुवाद

कृष्ण का पवित्र नाम सुन-सुनकर सारा देश वैष्णव बन गया। ऐसा प्रतीत होता था मानो कृष्ण के पवित्र नाम के अमृत ने सम्पूर्ण देश को आप्लावित कर दिया हो।

কত-ক্ষণে প্রভু যদি বাহ্য প্রকাশিলা ।
কূর্মের সেবক বহু সম্মান করিলা ॥ ১১৯ ॥
কত-ক্ষণে প্রভু যদি বাহ্য প্রকাশিলা ।
কূর্মের সেবক বহু সম্মান করিলা ॥ ১১৯ ॥

কত-ক্ষণে—कुछ समय के बाद; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **যদি**—जब; **বাহ্য**—बाह्य चेतना; **প্রকাশিলা**—प्रकट की; **কূর্মের**—भगवान् कूर्म के अर्चाविग्रह; **সেবক**—एक सेवक; **বহু**—बहुत; **সম্মান**—सम्मान; **করিলা**—दिखाया।

अनुवाद

कुछ समय बाद जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने बाह्य चेतना दिखलाई, तो कूर्मदेव के एक पुजारी ने उन्हें विविध भेंटें दीं।

যেই গ্রামে যায় তাহাঁ এই ব্যবহার ।
এক ঠাঞি কহিল, না কহিব আর বার ॥ ১২০ ॥
যেই গ্রামে যায় তাহাঁ এই ব্যবহার ।
এক ঠাঞি কহিল, না কহিব আর বার ॥ ১২০ ॥

যেই গ্রামে—जिस किसी गाँव में; **যায়**—वो जाते; **তাহাঁ**—वहाँ; **এই**—यह; **ব্যবহার**—व्यवहार; **এক ঠাঞি**—एक स्थान पर; **কহিল**—वर्णन किया है; **না**—नहीं; **কহিব**—वर्णन करूँगा; **আর**—दूसरी; **বার**—बार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की प्रचार-विधि का वर्णन मैं पहले ही कर चुका हूँ, अतएव मैं उसे फिर से नहीं दोहराऊँगा। महाप्रभु जिस किसी गाँव में जाते, उनका व्यवहार वैसा ही रहता।

'कूर्म'-नामे सेइ ग्रामे वैदिक ब्राह्मण ।
बहु श्रद्धा-भक्त्ये कैल प्रभुर निमन्त्रण ॥ १२१॥

'कूर्म'-नामे सेइ ग्रामे वैदिक ब्राह्मण ।
बहु श्रद्धा-भक्त्ये कैल प्रभुर निमन्त्रण ॥ १२१॥

कूर्म-नामे—कूर्म नाम के; **सेइ**—उस; **ग्रामे**—गाँव में; **वैदिक ब्राह्मण**—एक वैदिक ब्राह्मण ने; **बहु**—बहुत; **श्रद्धा-भक्त्ये**—श्रद्धा और भक्ति के साथ; **कैल**—दिया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **निमन्त्रण**—निमंत्रण।

अनुवाद

एक गाँव में कूर्म नाम का एक वैदिक ब्राह्मण था। उसने बड़े ही सत्कार तथा भक्ति से श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने घर आमन्त्रित किया।

घरे आनि' प्रभुर कैल पाद प्रक्षालन ।
सेइ जल वंश-सहित करिल भक्षण ॥ १२२॥

घरे आनि' प्रभुर कैल पाद प्रक्षालन ।
सेइ जल वंश-सहित करिल भक्षण ॥ १२२॥

घरे आनि'—उनको घर लाने के बाद; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **कैल**—किया; **पाद प्रक्षालन**—चरणकमलों को धोया; **सेइ जल**—उसी जल को; **वंश-सहित**—सभी परिवार के सदस्यों सहित; **करिल भक्षण**—पी लिया।

अनुवाद

यह ब्राह्मण महाप्रभु को अपने घर ले आया, उसने उनके चरणकमल धोये और उस जल को परिवार सहित पिया।

अनेक-प्रकार स्नेहे भिक्षा कराइल ।
गोसाञिर शेषान्न स-वंशे खाइल ॥ १२३॥

अनेक-प्रकार स्नेहे भिक्षा कराइल ।
गोसाञि शेषान्न स-वंशे खाइल ॥ १२३ ॥

अनेक-प्रकार—अनेक प्रकार; **स्नेहे**—स्नेह में; **भिक्षा**—भोजन; **कराइल**—खिलाया; **गोसाञि**—भगवान् चैतन्य महाप्रभु का; **शेष-अन्न**—बचा हुआ भोजन; **स-वंशे**—परिवार के सभी सदस्यों सहित; **खाइल**—खाया।

अनुवाद

उस कूर्म ब्राह्मण ने महाप्रभु को बड़े ही स्नेह तथा आदर से सभी प्रकार का भोजन कराया। उसके बाद जो शेष बचा उसे परिवार के सारे सदस्यों सहित उसने खाया।

'येई पाद-पद्म तोमार ब्रह्मा ध्यान करे ।
सेई पाद-पद्म साक्षाताइल मोर घरे ॥ १२४ ॥
'ग्रेइ पाद-पद्म तोमार ब्रह्मा ध्यान करे ।
सेइ पाद-पद्म साक्षाताइल मोर घरे ॥ १२४ ॥

ग्रेइ—जिन; **पाद-पद्म**—चरणकमलों का; **तोमार**—आपके; **ब्रह्मा**—ब्रह्माजी; **ध्यान करे**—ध्यान करते हैं; **सेइ पाद-पद्म**—वही चरणकमल; **साक्षात्**—साक्षात्; **आइल**—आये हैं; **मोर**—मेरे; **घरे**—घर पर।

अनुवाद

फिर उस ब्राह्मण ने प्रार्थना करनी शुरू की, "हे प्रभु, आपके जिन चरणकमलों का ध्यान ब्रह्माजी करते हैं, वे ही चरणकमल मेरे घर में पधारे हैं।

मोर भाग्यर सीमा ना याय कहन ।
आजि मोर श्लाघ्य हैल जन्म-कुल-धन ॥ १२५ ॥
मोर भाग्येर सीमा ना ग्राय कहन ।
आजि मोर श्लाघ्य हैल जन्म-कुल-धन ॥ १२५ ॥

मोर—मेरे; **भाग्येर**—भाग्य की; **सीमा**—सीमा; **ना**—नहीं; **ग्राय**—सम्भव; **कहन**—वर्णन करना; **आजि**—आज; **मोर**—मेरा; **श्लाघ्य**—धन्य; **हैल**—हो गया; **जन्म**—जन्म; **कुल**—कुल; **धन**—सम्पत्ति।

अनुवाद

"हे प्रभु, मेरे महान् सौभाग्य की कोई सीमा नहीं रही। इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। आज मेरा परिवार, जन्म तथा मेरा धन सभी धन्य हो गये।"

कृपा कर, प्रभु, मोरे, याँ तोमा-सङ्गे ।
सहिते ना पारि दुःख विषय-तरङ्गे' ॥ १२६॥

कृपा कर, प्रभु, मोरे, य्याँ तोमा-सङ्गे ।
सहिते ना पारि दुःख विषय-तरङ्गे' ॥ १२६॥

कृपा कर—कृपया दया करो; **प्रभु**—हे मेरे प्रभु; **मोरे**—मुझ पर; **य्याँ**—मैं जाता हूँ; **तोमा-सङ्गे**—आपके साथ; **सहिते ना पारि**—मैं सहन नहीं कर सकता; **दुःख**—दुःख; **विषय-तरङ्गे**—भौतिक जीवन की लहरों का।

अनुवाद

उस ब्राह्मण ने श्री चैतन्य महाप्रभु से प्रार्थना की, "हे प्रभु, आप मुझ पर कृपादृष्टि करें और मुझे अपने साथ चलने दें। मैं अब और अधिक समय तक भौतिक जीवन से उत्पन्न दुःख की लहरों को सहन नहीं कर सकता।"

तात्पर्य

यह कथन सब पर लागू होता है, चाहे कोई कितना ही धनी अथवा समृद्ध क्यों न हो। नरोत्तम दास ठाकुर ने इस कथन की पुष्टि इस प्रकार की है—*संसार-विषानले, दिवानिशि हिया ज्वले।* वे कहते हैं कि भौतिकतावादी जीवन-शैली से हृदय जलता रहता है। भौतिक जगत् के दुःखमय जीवन जीने का कोई साधन ढूँढे नहीं मिलता। यह तथ्य है कि जहाँ तक धन की बात है, कोई अत्यन्त सुखी हो सकता है, और वह हर प्रकार से ऐश्वर्यवान् हो सकता है, फिर भी उसे अपने शरीर तथा अपने परिवार के सदस्यों तथा आश्रितों के लिए उनके *विषयों* की पूर्ति का प्रबन्ध करना पड़ता है। अन्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे काफी कष्ट उठाने पड़ते हैं। इसीलिए नरोत्तम दास ठाकुर विनती करते हैं—*विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन।* अतएव मनुष्य को

भौतिकतावादी जीवन-शैली से मुक्त हो जाना चाहिए। उसे दिव्य आनन्द के सागर में डूब जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, भौतिकतावादी जीवन-शैली से मुक्त हुए बिना दिव्य आनन्द का आस्वादन नहीं किया जा सकता। ऐसा लगता है कि कूर्म नामक ब्राह्मण भौतिक दृष्टि से अत्यन्त सुखी था, क्योंकि उसने अपनी कुल-परम्परा का वर्णन *जन्म-कुल-धन* कहकर किया है। अब धन्य होने पर वह सारा भौतिक ऐश्वर्य छोड़ना चाह रहा था। वह श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ यात्रा करना चाह रहा था। वैदिक संस्कृति के अनुसार जब मनुष्य पचास वर्ष की आयु प्राप्त कर ले, तो उसे अपना परिवार त्यागकर शेष जीवन भगवान् की सेवा में बिताने के लिए वृन्दावन चले जाना चाहिए।

प्रभु कहे,—"ऐछे बात्कभु ना कहिबा ।
गृहे रहि' कृष्ण-नाम निरन्तर लइबा ॥ १२७॥

प्रभु कहे,—"ऐछे बात्कभु ना कहिबा ।
गृहे रहि' कृष्ण-नाम निरन्तर लइबा ॥ १२७॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **ऐछे बात्**—ऐसे वचन; **कभु**—कभी भी; **ना कहिबा**—नहीं बोलने चाहिए; **गृहे रहि'**—घर पर रहकर; **कृष्ण-नाम**—भगवान् का पावन नाम; **निरन्तर**—निरन्तर; **लइबा**—तुम्हें जपना चाहिए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "अब फिर से ऐसा मत कहना। अच्छा यही होगा कि तुम घर पर रहो और सदैव कृष्ण-नाम का जप करो।

तात्पर्य

इस कलियुग में सहसा अपना परिवार त्यागने की सलाह नहीं दी जाती, क्योंकि लोगों को ब्रह्मचारियों तथा गृहस्थों के रूप में समुचित प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस ब्राह्मण को सलाह दी कि वह अपना पारिवारिक जीवन त्यागने के लिए इतना उत्सुक न हो। अच्छा यही होगा कि वह गृहस्थ बना रहे, और किसी गुरु के निर्देशन में हरे कृष्ण महामन्त्र का नियमित कीर्तन करके शुद्ध बनने का प्रयास करे। यही श्री चैतन्य महाप्रभु की

शिक्षा है। यदि हर कोई इस शिक्षा का पालन करे, तो फिर संन्यास लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। अगले श्लोक में श्री चैतन्य महाप्रभु ने सबको सलाह दी है कि वे निरपराध भाव से हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करके तथा जो भी व्यक्ति मिले उसे इसी नियम की शिक्षा देकर आदर्श गृहस्थ बनें।

যারে দেখ, তারে কহ 'কৃষ্ণ'-উপদেশ ।
আমার আজ্ঞায় গুরু হঞা তার' এই দেশ ॥১২৮॥

য়ারে দেখ, তারে কহ 'কৃষ্ণ'-উপদেশ ।
আমার আজ্ঞায় গুরু হঞা তার' এই দেশ ॥ ১২৮ ॥

য়ারে—जिस किसी से; **देख**—तुम मिलो; **तारे**—उसको; **कह**—कहो; **कृष्ण-उपदेश**—भगवान् द्वारा कही गई *भगवद्गीता* अथवा *श्रीमद्भागवत* जो श्रीकृष्ण की पूजा करने का परामर्श देती है, उसका उपदेश; **आमार आज्ञाय**—मेरी आज्ञा से; **गुरु हञा**—गुरु बनकर; **तार'**—उद्धार करो; **एइ देश**—इस देश का।

अनुवाद

"हर एक को उपदेश दो कि वह भगवद्गीता तथा श्रीमद्भागवत में दिये गये भगवान् श्रीकृष्ण के आदेशों का पालन करे। इस तरह गुरु बनो और इस देश के हर व्यक्ति का उद्धार करने का प्रयास करो।"

तात्पर्य

अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ का यही उत्कृष्ट उद्देश्य है। बहुत-से लोग आकर पूछते हैं कि क्या इस संघ में सम्मिलित होने के लिए परिवार का त्याग करना आवश्यक है? किन्तु यह हमारा उद्देश्य नहीं है। मनुष्य अपने घर पर सुखपूर्वक रह सकता है। हम तो हर एक से इतना ही अनुरोध करते हैं कि महामन्त्र—*हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे / हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे*—का जप करे। यदि वह कुछ पढ़ना जानता है और *भगवद्गीता यथारूप* तथा *श्रीमद्भागवत* पढ़ सकता है, तो और भी अच्छा। अब इन ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्ध हैं और ये अत्यन्त अधिकृत रूप से किये गये हैं, इसलिये वे सभी वर्गों के लोगों को अच्छे लगते हैं। भौतिक कार्यकलापों में ही निमग्न रहने के बजाय सारे विश्व के लोगों को इस आन्दोलन का लाभ

उठाना चाहिए और घर में रहते हुए अपने परिवार सहित हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करना चाहिए। मनुष्य को अवैध सम्बन्ध, मांसाहार, जुआ तथा नशे जैसे पापकर्मों से भी बचना चाहिए। इन चारों में से अवैध सम्बन्ध अत्यन्त पापमय है। हर व्यक्ति को विवाह करना चाहिए। विशेष रूप से हर स्त्री को अवश्य विवाह करना चाहिए। यदि स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है, तो कुछ पुरुष एक से अधिक पत्नियाँ रख सकते हैं। इस तरह समाज में वेश्यावृत्ति नहीं पनपती। यदि पुरुष के एक से अधिक विवाह कर ले, तो अवैध यौनाचार रुक जायेगा। वह कृष्ण को अर्पित करने के लिए नाना प्रकार के व्यंजन—अन्न, फल, फूल तथा दूध—भी तैयार कर सकता है। भला मनुष्य क्यों व्यर्थ ही मांसाहार की लत डाले, और बिभत्स कसाई-घर चलाये? धूम्रपान करने और चाय-काफी पीने से क्या लाभ? लोग पहले से ही भौतिक भोग में मदोन्मत्त हैं, और यदि वे अधिक नशा करेंगे, तो फिर आत्म-साक्षात्कार के लिए अवसर कहाँ? इसी तरह मनुष्य को जुआ नहीं खेलना चाहिए और व्यर्थ ही मन को विक्षिप्त नहीं बनाना चाहिए। मानव-जीवन का वास्तविक उद्देश्य आध्यात्मिक पद प्राप्त करके भगवान् के पास लौटना है। आध्यात्मिक साक्षात्कार का यही सार है। कृष्णभावनामृत आन्दोलन मानव समाज को श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा कूर्म ब्राह्मण को दिये गये उपदेश में बताई गई विधि से जीवन की पूर्णता तक ऊपर उठाने का प्रयास कर रहा है। अर्थात् मनुष्य को घर में रहकर हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करना चाहिए और *भगवद्गीता* तथा *श्रीमद्भागवत* में दिये हुए कृष्ण के उपदेशों का प्रचार करना चाहिए।

কভু না বাধিবে তোমার বিষয়-তরঙ্গ ।
পুনরপি এই ঠাঞি পাবে মোর সঙ্গ'' ॥ ১২৯॥

कभु ना बाधिबे तोमार विषय-तरङ्ग ।
पुनरपि एइ ठाञि पाबे मोर सङ्ग" ॥ १२९॥

कभु—किसी समय; **ना**—नहीं; **बाधिबे**—रुकेगी; **तोमार**—तुम्हारी; **विषय-तरङ्ग**—भौतिक जीवन प्रणाली; **पुनरपि**—दोबारा; **एइ ठाञि**—इस स्थान पर; **पाबे**—तुम्हें मिलेगा; **मोर**—मेरा; **सङ्ग**—संग।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कूर्म ब्राह्मण को यह भी उपदेश दिया, "यदि तुम इस उपदेश का पालन करोगे, तो तुम्हारा गृहस्थ जीवन तुम्हारी आध्यात्मिक प्रगति में बाधक नहीं बनेगा। यदि तुम इन नियमों का पालन करोगे, तो हम पुनः यहीं मिलेंगे, अथवा तुम मेरा साथ कभी नहीं छोड़ोगे।"

तात्पर्य

यह सुअवसर हर एक के लिए है। यदि कोई व्यक्ति महाप्रभु के प्रतिनिधि के मार्गदर्शन में चैतन्य महाप्रभु के उपदेशों का पालन करे और हरे कृष्ण मन्त्र का जप करे, इसी नियम को यथासम्भव हर एक को सिखलाये, तो उसे भौतिक जीवन का कल्मष छू तक नहीं पायेगा। फिर चाहे वह वृन्दावन, नवद्वीप या जगन्नाथ पुरी जैसे तीर्थस्थानों में रहे, अथवा यूरोप के शहरों में रहे, जहाँ भौतिकतावादी जीवन की प्रधानता है। यदि कोई भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के उपदेशों का पालन करता है, तो वह भगवान् के सान्निध्य में रहता है। वह जहाँ भी रहता है, उस स्थान को वह वृन्दावन तथा नवद्वीप बना देता है। इसका अर्थ यह हुआ कि भौतिकता उसे छू भी नहीं पाती। कृष्णभावनामृत में अग्रसर होने वाले के लिए सफलता का यही रहस्य है।

एइ मत याँर घरे करे प्रभु भिक्षा ।
सेइ ऐछे कहे, ताँरे कराय एइ शिक्षा ॥ १३०॥

एइ मत ग्याँर घरे करे प्रभु भिक्षा ।
सेइ ऐछे कहे, ताँरे कराय एइ शिक्षा ॥ १३०॥

एइ मत—इस प्रकार; **ग्याँर**—जिसके; **घरे**—घर पर; **करे**—करते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भिक्षा**—भोजन; **सेइ**—वही पुरुष; **ऐछे**—उसी प्रकार; **कहे**—कहते; **ताँरे**—उसको; **कराय**—देते; **एइ**—यह; **शिक्षा**—ज्ञान।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु जिस किसी के घर में प्रसाद ग्रहण करके भिक्षा लेते, वे उस घर के रहने वालों को अपने संकीर्तन आन्दोलन में सम्मिलित

कर लेते और उन्हें वैसी ही शिक्षा देते, जैसी कि कूर्म नामक ब्राह्मण को दी थी।

तात्पर्य

यहाँ पर श्री चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय का बहुत ही सुन्दर वर्णन हुआ है। जो व्यक्ति उनकी शरण ग्रहण करता है और मन तथा हृदय से उनका पालन करता है, उसे अपना स्थान बदलने की आवश्यकता नहीं है। न ही उसे अपना पद बदलने की आवश्यकता है। वह गृहस्थ, डाक्टर, इंजीनियर या कुछ भी बना रह सकता है। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। उसे केवल श्री चैतन्य महाप्रभु के उपदेश का पालन करना है, हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करना है और सम्बन्धियों तथा मित्रों को *भगवद्गीता* तथा *श्रीमद्भागवत* की शिक्षाओं का उपदेश देना है। उसे श्री चैतन्य महाप्रभु के उपदेशों का पालन करते हुए घर पर दीनता तथा विनयशीलता सीखने की आवश्यकता है। इस तरह उसका जीवन आध्यात्मिक दृष्टि से सफल हो जायेगा। उसे "मैं महान् भक्त हूँ" ऐसा सोचकर बनावटी ढंग से उच्च भक्त बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इस तरह के विचार से बचना चाहिए। अच्छा तो यही होगा कि शिष्य न बनाये जाएँ। मनुष्य को घर पर ही हरे कृष्ण मन्त्र का कीर्तन करके तथा श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा स्थापित नियमों का प्रचार करके शुद्ध बनना चाहिए। इस तरह वह गुरु बन सकता है और भौतिक जीवन के कल्मष से मुक्त हो सकता है।

अनेक सहजिया लोग श्रील रूप, सनातन, रघुनाथ दास, भट्ट रघुनाथ, जीव तथा गोपाल भट्ट गोस्वामी, इन छः गोस्वामियों के कार्यकलापों की निन्दा करते हैं। ये श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी संगी हैं और उन्होंने भक्ति-विषयक पुस्तकें लिखकर समाज को ज्ञान प्रदान किया। इसी तरह नरोत्तम दास ठाकुर तथा अन्य महान् आचार्यों—यथा मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य आदि ने हजारों शिष्य बनाये और उन्हें भक्ति करने के लिए प्रेरित किया। किन्तु सहजियों का एक वर्ग है, जो यह सोचता है कि ये सारे कार्य भक्ति के सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं। निस्सन्देह, वे इन कार्यों को भौतिकता का अन्य रूप मानते हैं। इस तरह वे श्री चैतन्य महाप्रभु के नियमों का विरोध करके उनके चरणकमलों पर अपराध करते हैं। उन्हें महाप्रभु के उपदेशों पर विचार करना चाहिए और

विनम्र तथा विनीत समझे जाने के स्थान पर, श्री चैतन्य महाप्रभु के उन अनुयायियों की आलोचना करने से बचना चाहिए, जो प्रचार-कार्य में लगे हुए हैं। अपने प्रचारकर्ताओं की रक्षा करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने *चैतन्य-चरितामृत* के इन श्लोकों में बहुत ही स्पष्ट उपदेश दिया।

पथे याइते देवालये रहे येई ग्रामे ।
याँर घरे भिक्षा करे, सेई महा-जने ॥ १३१॥
कूर्मे यैछे रीति, तैछे कैल सर्व-ठाञि ।
नीलाचले पुनः यावत्ना आइला गोसाञि ॥ १३२॥

पथे ग्याइते देवालये रहे ग्येइ ग्रामे ।
ग्याँर घरे भिक्षा करे, सेइ महा-जने ॥ १३१॥
कूर्मे ग्यैछे रीति, तैछे कैल सर्व-ठाञि ।
नीलाचले पुनः ग्यावत्ना आइला गोसाञि ॥ १३२॥

पथे ग्याइते—सड़क पर जाते समय; **देवालये**—मन्दिर में; **रहे**—वे रहते; **ग्येइ ग्रामे**—किसी भी गाँव में; **ग्याँर घरे**—जिसके भी घर में; **भिक्षा करे**—भोजन करते; **सेइ महा-जने**—उसी महान् व्यक्ति को; **कूर्मे**—ब्राह्मण कूर्म के; **ग्यैछे**—जैसे; **रीति**—प्रकार; **तैछे**—उसी तरह; **कैल**—किया; **सर्व-ठाञि**—सभी स्थानों पर; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी को; **पुनः**—फिर; **ग्यावत्**—जब तक नहीं; **ना**—नहीं; **आइला**—लौटे; **गोसाञि**—महाप्रभु।

अनुवाद

अपनी यात्रा के दौरान श्री चैतन्य महाप्रभु या तो मन्दिर में या सड़क के किनारे रात बिताते। जब वे किसी व्यक्ति के घर भोजन ग्रहण करते, तो वे उसे वही उपदेश देते, जो उन्होंने कूर्म ब्राह्मण को दिया था। दक्षिण भारत की यात्रा से जगन्नाथ पुरी लौट आने तक महाप्रभु इसी प्रकार प्रचार करते रहे।

अतएव इहाँ कहिलाँ करिया विस्तार ।
एई-मत जानिबे प्रभुर सर्वत्र व्यवहार ॥ १३३॥

अतएव इहाँ कहिलाँ करिया विस्तार ।
एइ-मत जानिबे प्रभुर सर्वत्र व्यवहार ॥ १३३॥

अतएव—अतएव; **इहाँ**—यहाँ; **कहिलाँ**—मैंने वर्णन किया है; **करिया विस्तार**—विस्तारपूर्वक; **एइ-मत**—इस प्रकार; **जानिबे**—आप समझ सकते हैं; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **सर्वत्र**—सर्वत्र; **व्यवहार**—व्यवहार।

अनुवाद

इस तरह मैंने कूर्म के प्रसंग में महाप्रभु के व्यवहार का विस्तार से वर्णन किया है। इसी तरह से आप सारे दक्षिण भारत में महाप्रभु के व्यवहार को जान सकेंगे।

এই-মত সেই রাত্রি তাহাঙি রহিলা ।
প্রাতঃ-কালে প্রভু স্নান করিয়া চলিলা ।।১৩৪।।

एइ-मत सेइ रात्रि ताहाङि रहिला ।
प्रातः-काले प्रभु स्नान करिया चलिला ॥ १३४॥

एइ-मत—इस प्रकार; **सेइ रात्रि**—उस रात; **ताहाङि**—वहाँ; **रहिला**—रहे; **प्रातः-काले**—सुबह; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **स्नान**—स्नान; **करिया**—करके; **चलिला**—फिर चल पड़े।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु एक स्थान में रात-भर रहते, और प्रातःकाल स्नान करके पुनः चल देते।

প্রভুর অনুব্রজি' কূর্ম বহু দূর আইলা ।
প্রভু তাঁরে যত্ন করি' ঘরে পাঠাইলা ।।১৩৫।।

प्रभुर अनुव्रजि' कूर्म बहु दूर आइला ।
प्रभु ताँरे यत्न करि' घरे पाठाइला ॥ १३५॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **अनुव्रजि'**—पीछे पीछे जाकर; **कूर्म**—कूर्म नामक ब्राह्मण; **बहु**—बहुत; **दूर**—दूर; **आइला**—आया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उसको; **यत्न करि'**—काफी प्रयास करके; **घरे**—उसके घर; **पाठाइला**—भेज दिया।

अनुवाद

जब महाप्रभु चले, तो कूर्म ब्राह्मण बहुत दूर तक उनके पीछे-पीछे आया, किन्तु अन्त में महाप्रभु ने उसे घर वापस भेज दिया।

'বাসুদেব'-নাম এক দ্বিজ মহাশয় ।
সর্বাঙ্গে গলিত কুষ্ঠ, তাতে কীড়া-ময় ॥ ১৩৬॥

'বাসুদেব'-নাম এক দ্বিজ মহাশয় ।
সর্বাঙ্গে গলিত কুষ্ঠ, তাতে কীড়া-ময় ॥ ১৩৬॥

বাসুদেব-নাম—বাসুদেব নামক; **এক দ্বিজ**—এক ব্রাহ্মণ; **মহাশয়**—মহাপুরুষ; **সর্ব-অঙ্গে**—পূরে শরীর পর; **গলিত**—বহুত অধিক; **কুষ্ঠ**—কুষ্ঠ রোগ; **তাতে**—উসমেঁ; **কীড়া-ময়**—জীবিত কীড়োঁ সে ভরা।

অনুবাদ

বাসুদেব নাম কা এক অন্য ব্রাহ্মণ থা, জো এক মহান্ ব্যক্তি থা, কিন্তু কোঢ় সে পীড়িত থা। উসকা শরীর জীবিত কীড়োঁ সে ভরা থা।

অঙ্গ হৈতে যেই কীড়া খসিয়া পড়য় ।
উঠাঞা সেই কীড়া রাখে সেই ঠাঞ ॥ ১৩৭॥

অঙ্গ হৈতে যেই কীড়া খসিয়া পড়য় ।
উঠাঞা সেই কীড়া রাখে সেই ঠাঞ ॥ ১৩৭॥

অঙ্গ হৈতে—উসকে শরীর সে; **যেই**—জো; **কীড়া**—এক কীড়া; **খসিয়া**—গিরতা; **পড়য়**—নীচে; **উঠাঞা**—উঠাকর; **সেই**—উসে; **কীড়া**—কীড়া; **রাখে**—রখতা; **সেই ঠাঞ**—উসী স্থান পর।

অনুবাদ

যদ্যপি বাসুদেব কোঢ় সে পীড়িত থা, কিন্তু জ্ঞানী থা। জ্যোঁহী উসকে শরীর সে কোঈ কীড়া গির পড়তা, তো বহ উসে উঠাকর পুনঃ উসী স্থান মেঁ রখ দেতা।

রাত্রিতে শুনিলা তেঁহো গোসাঞির আগমন ।
দেখিবারে আইলা প্রভাতে কূর্মের ভবন ॥ ১৩৮॥

রাত্রিতে শুনিলা তেঁহো গোসাঞির আগমন ।
দেখিবারে আইলা প্রভাতে কূর্মের ভবন ॥ ১৩৮॥

রাত্রিতে—রাত কো; **শুনিলা**—সুনা; **তেঁহো**—উসনে; **গোসাঞির**—চৈতন্য মহাপ্রভু কা;

आगमन—आगमन; **देखिबारे**—उनके दर्शन के लिए; **आइला**—वह आया; **प्रभाते**—प्रात: काल; **कूर्मेर**—कूर्म नामक ब्राह्मण के; **भवन**—घर पर।

अनुवाद

एक रात को वासुदेव ने महाप्रभु के आगमन की बात सुनी, और प्रात: होते ही वह कूर्म के घर महाप्रभु का दर्शन करने आया।

প্রভুর গমন কূর্ম-মুখেতে শুনিঞা ।
ভূমিতে পড়িলা দুঃখে মূর্চ্ছিত হঞা ॥১৩৯॥

प्रभुर गमन कूर्म-मुखेते शुनिञा ।
भूमिते पड़िला दु:खे मूर्च्छित हञा ॥ १३९ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **गमन**—प्रस्थान; **कूर्म-मुखेते**—कूर्म ब्राह्मण के मुख से; **शुनिञा**—सुनकर; **भूमिते**—भूमि पर; **पड़िला**—गिर गया; **दु:खे**—दु:खी होकर; **मूर्च्छित**—मूर्च्छित; **हञा**—होकर।

अनुवाद

जब वह कोढ़ी वासुदेव कूर्म के घर चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने गया, तो उसे बताया गया कि महाप्रभु वहाँ से पहले ही जा चुके हैं। इस पर वह बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ा।

অনেক প্রকার বিলাপ করিতে লাগিলা ।
সেই-ক্ষণে আসি' প্রভু তাঁরে আলিঙ্গিলা ॥১৪০॥

अनेक प्रकार विलाप करिते लागिला ।
सेइ-क्षणे आसि' प्रभु ताँरे आलिङ्गिला ॥ १४० ॥

अनेक प्रकार—अनेक प्रकार; **विलाप**—विलाप; **करिते**—करने; **लागिला**—लगा; **सेइ-क्षणे**—तत्क्षण; **आसि'**—लौटकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उसका; **आलिङ्गिला**—आलिंगन किया।

अनुवाद

जब वह कोढ़ी ब्राह्मण वासुदेव महाप्रभु का दर्शन न कर सकने के कारण विलाप कर रहा था, तो महाप्रभु तुरन्त उस स्थान को लौट आये और उन्होंने उसका आलिंगन किया।

প্রভু-স্পর্শে দুঃখ-সঙ্গে কুষ্ঠ দূরে গেল ।
আনন্দ সহিতে অঙ্গ সুন্দর হইল ॥ ১৪১ ॥

প্রভু-স্পর্শে দুঃখ-সঙ্গে কুষ্ঠ দূরে গেল ।
আনন্দ সহিতে অঙ্গ সুন্দর হইল ॥ ১৪১ ॥

প্রভু-স্পর্শে—श्री चैतन्य महाप्रभु के स्पर्श से; **दुःख-सङ्गे**—दुःख सहित; **कुष्ठ**—कुष्ठ रोग; **दूरे**—दूर; **गेल**—चला गया; **आनन्द सहिते**—बड़ी प्रसन्नता से; **अङ्ग**—सारा शरीर; **सुन्दर**—सुन्दर; **हइल**—हो गया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसका स्पर्श किया, तो उसका कोढ़ तथा उसका कष्ट एकसाथ दूर भाग गये। वासुदेव का शरीर अत्यन्त सुन्दर हो गया, जिससे उसे परम सुख प्राप्त हुआ।

প্রভুর কৃপা দেখি' তাঁর বিস্ময় হৈল মন ।
শ্লোক পড়ি' পায়ে ধরি, করয়ে স্তবন ॥ ১৪২ ॥

প্রভুর কৃপা দেখি' তাঁর বিস্ময় হৈল মন ।
শ্লোক পড়ি' পায়ে ধরি, করয়ে স্তবন ॥ ১৪২ ॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा; **देखि'**—देखकर; **ताँर**—वासुदेव ब्राह्मण का; **विस्मय हैल मन**—मन विस्मित हो गया; **श्लोक पड़ि'**—एक श्लोक पढ़कर; **पाये धरि**—चरणकमल को छूकर; **करये स्तवन**—स्तुति करता है।

अनुवाद

वह ब्राह्मण वासुदेव श्री चैतन्य महाप्रभु की अद्भुत कृपा देखकर चकित था और वह महाप्रभु के चरणकमलों का स्पर्श करके श्रीमद्भागवत का एक श्लोक सुनाने लगा।

কাহং দরিদ্রঃ পাপীয়ান্ক কৃষ্ণঃ শ্রী-নিকেতনঃ ।
ব্রহ্ম-বন্ধুরিতি স্মাহং বাহুভ্যাং পরিরম্ভিতঃ ॥ ১৪৩ ॥

क्वाहं दरिद्रः पापीयान्क्व कृष्णः श्री-निकेतनः ।
ब्रह्म-बन्धुरिति स्माहं बाहुभ्यां परिरम्भितः ॥ १४३ ॥

क्व—कौन; **अहम्**—मैं; **दरिद्रः**—दरिद्र; **पापीयान्**—पापी; **क्व**—कौन; **कृष्णः**—कृष्ण भगवान्; **श्री-निकेतनः**—सभी ऐश्वर्य के दिव्य रूप; **ब्रह्म-बन्धुः**—ब्राह्मण का मित्र जो ब्राह्मण कहलाने के योग्य भी नहीं है; **इति**—इस तरह; **स्म**—निश्चित रूप से; **अहम्**—मैं; **बाहुभ्याम्**—भुजाओं से; **परिरम्भितः**—आलिंगित किया गया।

अनुवाद

उसने कहा, "'मैं कौन हूँ? एक पापी दरिद्र ब्रह्मबन्धु। और कृष्ण कौन हैं? छः ऐश्वर्ययुक्त पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्। फिर भी उन्होंने अपनी दोनों भुजाओं में भरकर मेरा आलिंगन किया है।'"

तात्पर्य

यह श्लोक सुदामा ब्राह्मण ने भगवान् कृष्ण से भेंट के समय कहा था (*श्रीमद्भागवत* १०.८१.१६)।

বহু স্তুতি করি' কহে,—শুন, দয়া-ময় ।
জীবে এই গুণ নাহি, তোমাতে এই হয় ॥ ১৪৪॥
মোরে দেখি' মোর গন্ধে পলায় পামর ।
হেন-মোরে স্পর্শ' তুমি,—স্বতন্ত্র ঈশ্বর ॥ ১৪৫॥

বহু স্তুতি করি' কহে,—শুন, দয়া-ময় ।
জীবে এइ গুণ নাহি, তোমাতে এइ হয় ॥ ১৪৪॥
মোরে দেখি' মোর গন্ধে পলায় পামর ।
হেন-মোরে স্পর্শ' তুমি,—স্বতন্ত্র ঈশ্বর ॥ ১৪৫॥

বহু—बहुत; **स्तुति**—प्रार्थनाएँ; **करि'**—करके; **कहे**—कहता है; **शुन**—कृपया सुनो; **दया-मय**—हे दयामय प्रभु; **जीवे**—जीव में; **एइ**—यह; **गुण**—गुण; **नाहि**—नहीं है; **तोमाते**—आप में; **एइ**—यह; **हय**—है; **मोरे देखि'**—मुझे देखने से; **मोर गन्धे**—मेरे शरीर की गंध से; **पलाय**—दूर जाता है; **पामर**—एक पापी व्यक्ति भी; **हेन-मोरे**—मेरे जैसा व्यक्ति; **स्पर्श'**—स्पर्श; **तुमि**—आप; **स्वतन्त्र**—पूर्णतया स्वतन्त्र; **ईश्वर**—पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् ।

अनुवाद

वासुदेव ब्राह्मण ने आगे कहा, "हे दयामय प्रभु, ऐसी कृपा सामान्य जीवों में सम्भव नहीं। ऐसी कृपा तो केवल आप में ही पाई जा सकती है। पापी व्यक्ति भी मुझे देखकर मेरे शरीर की दुर्गंध के कारण दूर चला

जाता है, फिर भी आपने मेरा स्पर्श किया। पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का व्यवहार ऐसा स्वतन्त्र होता है।

किन्तु आछिलाँ भाल अधम हञा ।
एबे अहङ्कार मोर जन्मिबे आसिया ॥ १४६ ॥

किन्तु आछिलाँ भाल अधम हञा ।
एबे अहङ्कार मोर जन्मिबे आसिया ॥ १४६ ॥

किन्तु—किन्तु; **आछिलाँ**—मैं था; **भाल**—ठीक ठाक; **अधम**—अधम पुरुष; **हञा**—होकर; **एबे**—अब; **अहङ्कार**—अहंकार; **मोर**—मेरा; **जन्मिबे**—प्रकट होगा; **आसिया**—आना।

अनुवाद

उस दीन विनम्र वासुदेव को चिन्ता थी कि श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से ठीक हो जाने से कहीं वह गर्वित न हो उठे।

प्रभु कहे,—"कभु तोमार ना हबे अभिमान ।
निरन्तर कह तुमि 'कृष्ण' 'कृष्ण' नाम ॥ १४७ ॥

प्रभु कहे,—"कभु तोमार ना हबे अभिमान ।
निरन्तर कह तुमि 'कृष्ण' 'कृष्ण' नाम ॥ १४७ ॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने कहा; **कभु**—कभी; **तोमार**—तुम्हें; **ना**—नहीं; **हबे**—होगा; **अभिमान**—अभिमान; **निरन्तर**—निरन्तर; **कह**—जप करो; **तुमि**—तुम; **कृष्ण कृष्ण नाम**—कृष्ण का नाम।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस ब्राह्मण को इससे बचाने के लिए उपदेश दिया कि वह निरन्तर हरे कृष्ण मन्त्र का जप करे। ऐसा करने से वह कभी भी व्यर्थ गर्वित नहीं होगा।

कृष्ण उपदेशि' कर जीवेर निस्तार ।
अचिराते कृष्ण तोमा करिबेन अङ्गीकार" ॥ १४८ ॥

कृष्ण उपदेशि' कर जीवेर निस्तार ।
अचिराते कृष्ण तोमा करिबेन अङ्गीकार" ॥ १४८ ॥

कृष्ण उपदेशि'—कृष्ण का उपदेश देकर; **कर**—करो; **जीवेर**—सभी जीवों का; **निस्तार**—उद्धार; **अचिराते**—अति शीघ्र; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **तोमा**—तुम्हें; **करिबेन**—करेंगे; **अङ्गीकार**—स्वीकार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने वासुदेव को यह भी सलाह दी कि वह कृष्ण के विषय में उपदेश दे और इस तरह जीवों का उद्धार करे। फलस्वरूप, कृष्ण शीघ्र ही उसका अपने भक्त के रूप में स्वीकार कर लेंगे।

तात्पर्य

यद्यपि वासुदेव विप्र कोढ़ी था और उसने अत्यधिक कष्ट सहन किया था, फिर भी श्री चैतन्य महाप्रभु ने उसे ठीक करने के बाद कृष्ण-चेतना के प्रचार के लिए उपदेश दिया। बदले में महाप्रभु ने यही चाहा कि वासुदेव विप्र कृष्ण के उपदेशों का प्रचार करे और सारे मनुष्यों का उद्धार करे। अन्तर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ की यही विधि है। इस संघ के हर सदस्य को अत्यन्त घृणित अवस्था से उबारा गया है, किन्तु अब वे कृष्णभावनामृत सम्प्रदाय के प्रचार में लगे हुए हैं। उन्हें न केवल भौतिकतावाद रूपी रोग से छुटकारा मिला है, अपितु वे अत्यन्त सुखी जीवन बिता रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति उन्हें कृष्ण के महान् भक्तों के रूप में स्वीकार करता है, और उनके गुण उनके चेहरों से प्रकट हो जाते हैं। यदि कोई चाहता है कि कृष्ण द्वारा भक्त के रूप में उसे मान्यता मिले, तो उसे श्री चैतन्य महाप्रभु का उपदेश मानते हुए प्रचार-कार्य में लग जाना चाहिए। तब उसे निःसन्देह ही साक्षात् कृष्णस्वरूप श्रीकृष्ण चैतन्य के चरणकमल प्राप्त हो सकेंगे।

এতেক কহিয়া প্রভু কৈল অন্তর্ধানে ।
দুই বিপ্র গলাগলি কান্দে প্রভুর গুণে ॥ ১৪৯ ॥

एतेक कहिया प्रभु कैल अन्तर्धाने ।
दुइ विप्र गलागलि कान्दे प्रभुर गुणे ॥ १४९ ॥

एतेक—इतना; **कहिया**—कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैल**—हो गये; **अन्तर्धाने**—अन्तर्धान; **दुइ विप्र**—दोनों ब्राह्मण कूर्म तथा वासुदेव; **गलागलि**—एक दूसरे का आलिंगन करके; **कान्दे**—रोने लगे; **प्रभुर गुणे**—चैतन्य महाप्रभु की कृपा के कारण।

अनुवाद

वासुदेव ब्राह्मण को इस प्रकार उपदेश देने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु उस स्थान से अदृश्य हो गये। तब कूर्म तथा वासुदेव दोनों ब्राह्मण एक-दूसरे के गले लगकर श्री चैतन्य महाप्रभु के दिव्य गुणों का स्मरण करके रोने लगे।

'वासुदेवोद्धार' एई कहिल आख्यान ।
'वासुदेवामृत-प्रद' हैल प्रभुर नाम ॥ १५०॥

'वासुदेवोद्धार' एइ कहिल आख्यान ।
'वासुदेवामृत-प्रद' हैल प्रभुर नाम ॥ १५०॥

वासुदेव-उद्धार—वासुदेव का उद्धार ; **एइ**—यह; **कहिल**—वर्णित है; **आख्यान**—कथा; **वासुदेव-अमृत-प्रद**—वासुदेव को अमृत देने वाला; **हैल**—हो गया; **प्रभुर नाम**—श्री चैतन्य महाप्रभु का पावन नाम।

अनुवाद

इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु ने जिस तरह वासुदेव कोढ़ी का उद्धार किया, और जिस तरह उनका नाम वासुदेवामृत-प्रद पड़ा, उसका वर्णन मैंने किया है।

तात्पर्य

'वासुदेवामृत-प्रद' नाम का उल्लेख सार्वभौम भट्टाचार्य द्वारा रचित श्लोकों में हुआ है।

एई त' कहिल प्रभुर प्रथम गमन ।
कूर्म-दरशन, वासुदेव-विमोचन ॥ १५१॥

एइ त' कहिल प्रभुर प्रथम गमन ।
कूर्म-दरशन, वासुदेव-विमोचन ॥ १५१॥

एइ त' कहिल—इस प्रकार मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु का; **प्रथम गमन**—यात्रा का आरम्भ; **कूर्म-दरशन**—कूर्म मन्दिर के दर्शन करके; **वासुदेव-विमोचन**—और वासुदेव नामक कुष्ठ-पीड़ित ब्राह्मण का उद्धार करना।

अनुवाद

इस तरह मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की प्रारम्भिक यात्रा का वर्णन समाप्त करता हूँ, जिसमें उन्होंने कूर्म-मन्दिर का दर्शन किया और कोढ़ी ब्राह्मण वासुदेव का उद्धार किया।

श्रद्धा करि' एइ लीला ये करे श्रवण ।
अचिराते मिलये तारे चैतन्य-चरण ॥ १५२॥

श्रद्धा करि' एइ लीला ये करे श्रवण ।
अचिराते मिलये तारे चैतन्य-चरण ॥ १५२॥

श्रद्धा करि'—अति श्रद्धा सहित; **एइ लीला**—यह लीला; **ये**—जो कोई; **करे**—करता है; **श्रवण**—श्रवण; **अचिराते**—अति शीघ्र; **मिलये**—मिलते हैं; **तारे**—उसको; **चैतन्य-चरण**—चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल।

अनुवाद

जो कोई श्री चैतन्य महाप्रभु की इन लीलाओं को अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सुनेगा, उसे तुरन्त ही उनके चरणकमल प्राप्त हो जायेंगे।

तात्पर्य

जब मनुष्य की चेतना चैतन्य महाप्रभु की कृपा से कृष्ण-भावना सहित जाग्रत होती है, तो उसका आध्यात्मिक जीवन जाग्रत होता है और वह भगवान् की सेवा में अनुरक्त हो जाता है। केवल तभी वह आचार्य बन सकता है। दूसरे शब्दों में, सबको श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणचिह्नों का अनुसरण करते हुए प्रचार-कार्य में लग जाना चाहिए। इस तरह भगवान् कृष्ण प्रसन्न होंगे और तुरन्त ही उसे मान्यता प्रदान करेंगे। वस्तुत: श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्त को प्रचार-कार्य में लग जाना चाहिए, जिससे भगवान् के अनुयायियों की संख्या में वृद्धि हो। इस प्रकार वास्तविक वैदिक ज्ञान का प्रचार सारे विश्व में करने से सारी मानवता को लाभ पहुँचेगा।

চৈতন্য-লীলার আদি-অন্ত নাহি জানি ।
সেই লিখি, যেই মহান্তের মুখে শুনি ॥ ১৫৩ ॥

चैतन्य-लीलार आदि-अन्त नाहि जानि ।
सेइ लिखि, येइ महान्तेर मुखे शुनि ॥ १५३ ॥

चैतन्य-लीलार—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का; **आदि**—आरम्भ; **अन्त**—और अन्त; **नाहि**—नहीं; **जानि**—मैं जानता हूँ; **सेइ**—वही; **लिखि**—मैं लिखता हूँ; **येइ**—जो; **महान्तेर**—महापुरुषों के; **मुखे**—मुख से; **शुनि**—मैं सुनता हूँ।

अनुवाद

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का आदि और अन्त नहीं जानता। फिर भी मैंने जो कुछ लिखा है, उसे महापुरुषों के मुख से सुनकर लिखा है।

ইথে অপরাধ মোর না লইও, ভক্ত-গণ ।
তোমা-সবার চরণ—মোর একান্ত শরণ ॥ ১৫৪ ॥

इथे अपराध मोर ना लइओ, भक्त-गण ।
तोमा-सबार चरण—मोर एकान्त शरण ॥ १५४ ॥

इथे—इसमें; **अपराध**—अपराध; **मोर**—मेरे; **ना लइओ**—न लो; **भक्त-गण**—हे भक्तों; **तोमा**—आप; **सबार**—सबके; **चरण**—चरणकमल; **मोर**—मेरा; **एकान्त**—अकेला; **शरण**—आश्रय।

अनुवाद

हे भक्तों, कृपया इस विषय में मेरे अपराधों पर विचार मत करना। आपके चरणकमल ही मेरे एकमात्र शरण हैं।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১৫৫ ॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १५५ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—के चरणकमलों पर; **ग्रार**—जिनकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—चैतन्य चरितामृत नामक ग्रन्थ; **कहे**—वर्णन करता है; **कृष्ण-दास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों पर प्रार्थना करते हुए और सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए मैं कृष्णदास उनके चरणचिह्नों पर चलते हुए श्रीचैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत मध्यलीला के सातवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ जिसमें महाप्रभु की दक्षिण-भारत-यात्रा तथा वासुदेव ब्राह्मण के मोक्ष का वर्णन हुआ है ।